Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 40 अंक-48
कल्पादि सम्वत् 1972949116

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 08 मार्च से 14 मार्च 2017 तक
फाल्गुन शुक्ल एकादशी से चैत्र कृष्ण द्वितीया सम्वत् 2073 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

इस ओर भी ध्यान दे... पृष्ठ- 3

अनुपम जड़ी बूटी... पृष्ठ- 4

लला फिर आइयों... पृष्ठ- 5

वन्दे मातरम् एण्ड.. पृष्ठ- 8

जनता पूछे कहां है... पृष्ठ- 12

होली की शुभकामनायें

सभी पाठकों व देशवासियों को रंगमय एवं उत्साहमय पर्व होली की कोटिशः शुभकामनायें।

चन्द्रप्रकाश कौशिक (राष्ट्रीय अध्यक्ष) मुन्ना कुमार शर्मा (राष्ट्रीय महासचिव) वीरेश त्यागी (राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री)

एलओसी पर घुसपैठ की कोशिश नाकाम

सरकार घुसपैठ कब रोकेगी–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

बीएसएफ ने जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की एक कोशिश नाकाम कर दी और एक आतंकवादी को मार गिराया। अधिकारियों ने बताया कि राजौरी के केरी सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर बाड़ के पास तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने कुछ संदिग्ध गतिविधियां देखीं जिसके बाद करीब आधी रात को यह घटना हुई। उन्होंने बताया कि भीषण मुठभेड़ करीब ३० मिनट चली और फिर दूसरी ओर से गोलियां चलने की आवाज बंद हो गई। तड़के तलाशी ली गई जिसके बाद बीएसएफ के दल को एक आतंकवादी का शव और उसके पास एक शेष पृष्ठ 11 पर

चीन और भारत ने आपसी रिश्तों पर जताई दृढ़ प्रतिबद्धता

चीन एनएसजी की सदस्यता का समर्थन करें–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

विदेश सचिव एस जयशंकर ने चीन के शीर्ष राजनयिक यांग जिएची से बातचीत की जिसमें एनएसजी की सदस्यता के लिए भारत की कोशिशों और जैश–ए–मोहम्मद प्रमुख मसूद अजहर पर संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंध पर चीन की बेरूखी के बावजूद दोनों ने सकारात्मक रिश्ते विकसित करने के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता जताई। श्रीलंका से यहां पहुंचे जयशंकर ने चीन के स्टेट काउंसिलर यांग से मुलाकात की। यांग भारत और चीन के बीच के सीमा विवाद निबटाने के तंत्र के लिए चीन के विशेष प्रतिनिधि हैं। चीन सरकार में सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के स्टेट काउंसिलर को देश के नेतृत्व के तहत सीधे काम करने वाले शीर्ष राजनयिक की हैसियत है। देश की सत्ता एवं कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालय झोंगनानहाइ में जयशंकर का स्वागत करते हुए यांग ने कहा कि मतभेदों के बावजूद दोनों पक्षों के बीच के रिश्तों में पिछले साल सकारात्मक विकास हुआ। यांग ने चीन में भारत के राजदूत की हैसियत से जयशंकर के योगदान की सराहना की और कहा कि अनेक स्तरों पर दोनों देशों के बीच अच्छा संवाद एवं संचार है। अर्थव्यवस्था, कारोबार, संस्कृति एवं लोगों के आदान–प्रदान के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच अच्छा सहयोग जारी है। उम्मीद की जा रही है कि जयशंकर चीन के विदेश मंत्री वांग यी से मुलाकात करेंगे। वह कल चीन के कार्यकारी विदेश उपमंत्री झांग येसुइ के साथ सामरिक संवाद में भी कल हिस्सा लेंगे। सामरिक संवाद की अहमियत रेखांकित करते हुए चीन ने वार्ता के लिए झांग को इसमें रखा है जो चीनी विदेश मंत्रालय की प्रभावशाली सीपीसी समिति के मुखिया भी हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले साल वांग की भारत यात्रा के दौरान नई दिल्ली में सामरिक संवाद का स्तर उन्नत शेष पृष्ठ 10 पर

यमराज की चिंता

एम.डी. मिश्रा 'आनन्द'

सूर्यपुत्र यमराज जिनके नाम से संसार के समस्त प्राणी काँपते हैं, आज स्वयं ही चिन्ताग्रस्त होकर ब्रह्माजी के दरबार में उपस्थित हैं। सभी दरबारी आश्चर्यचकित होते हैं। तभी ब्रह्माजी ने पूछा कि कहो यमराज अपने दुःख का कारण सुनाओ, क्या समस्या है? यमराज ने प्रणाम करके कहा कि आप संसार के सृजक हैं। पितामह हमारी कार्य–प्रगति पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है, खास तौर पर मनुष्य योनि पाकर जो पृथ्वी पर पहुँच पाते हैं उन्हें वापस लाने में कठिनाई हो रही है। स्वर्गलोक और नर्क सभी खाली होते जा रहे हैं। मृत्युलोक अब मृत्युलोक नहीं रहा है, आबादी बढ़ती जा रही है, लौटकर लोग स्वर्ग भी नहीं आना चाहते हैं। कुछ लोगों ने तो स्वर्ग अपने घरों में ही बना लिये हैं। जो इन्द्रलोक से बढ़कर है। पहले लोग भूख, कुपोषण और बीमारी से शीघ्र निपट जाते थे, साठ वर्ष का बूढ़ा कहा जाता था। अब तो सौ वर्ष के लोग आसमान में उड़ान भर रहे हैं, कैलास, मानसरोवर की यात्राएँ कर रहे हैं। और जब भी बीमार पड़ जाते हैं तो अस्पताल पाँच सितारा होटलों की भाँति आरामदायक हो गये हैं। उनके अन्दर अप्सराओं जैसी सुन्दर सजी–संवरी नर्सें मुस्कुराते हुए उनकी तीमारदारी करती हैं और उसके अन्दर ही अच्छे खानपान के कन्टीन हैं। रोगी के ठीक होने पर घर जाने के लिये कहा जाता है तो उसके सहायक साथी अस्पताल से वापिस ही नहीं आना चाहते हैं। मरीज भी वहीं विश्राम करना चाहता है। ऐसी सुविधाएँ तो घर पर भी उपलब्ध नहीं हैं।

अब मात्र कुछ विभाग ही सौभाग्य से ऐसे हैं जिनकी वजह से मृत्यु हो रही है। उनके हम आभारी हैं। परिवहन विभाग जहाँ पर सम्पूर्ण कार्य दलालों के माध्यम से लेनदेन द्वारा होता है, टूटे–फूटे ओवरलोड वाहन सड़कों पर दौड़ रहे हैं, अप्रशिक्षित, अनाड़ी चालक आपस में टकरा रहे हैं। कहीं ट्राला से कार टकराती है, तो कहीं ठसाठस भरी बस उफनती नदी में गिर जाती है अथवा गहरी खाई में गिरती है। जिसमें मात्र एक–दो दर्जन ही मृत्यु को पाते हैं, घायल हमारी प्रगति में नहीं गिने जाते हैं। दो पहिया वाहन इतने बढ़ गये हैं कि घर के लाडले कोचिंग और स्कूल अब पैदल नहीं जाते। बस इन्हीं दुर्घटनाओं से प्रगति हो रही है। अन्य सभी जगहों से निराशा ही हाथ लग रही है। अब पितामह आप ही बताइये कि वाहन दुर्घटना और एक्सीडेंट से मृत्यु कोटा कहाँ तक पूरा हो सकता है। हालांकि आशा से अधिक पूर्ति प्रतिदिन हो रही है। वैसे तो पैदल वाले भी सुरक्षित नहीं हैं, उन्हें भी चपेट में ले रहे हैं।

ब्रह्माजी ने कहा, "तुम्हारी परेशानी हम समझते हैं। आप निराश नहीं हों और हमारा काम तो मुख्य रूप से सृजन करना है। इसके लिए निदान हेतु आप भोलेनाथ शंकरजी के पास जाइये शायद वह कुछ मदद करें।" यमराज ने ब्रह्माजी को सादर प्रणाम किया और उत्तराखंड केदारनाथ जाकर भोलेनाथ को अपना दुखड़ा सुनाया तो उन्होंने कहा, "गत वर्ष स्वर्गाश्रम बैकुण्ठ धाम के स्थान भरने का कार्य हमने बहुत कर दिया था और नेपाल में इस वर्ष काफी प्रगति इसमें हो गई है जो आपको भी पता है। और थोड़ा बहुत प्रयास इस वर्ष भी हम कर रहे हैं। यहाँ अतिवृष्टि ने हमारा साथ देना भी स्वीकार कर लिया है। कार्य प्रारम्भ हो चुका है अब और इससे अधिक सहयोग हम नहीं कर पायेंगे। अब आप विष्णुलोक पधारिये।" यमराज ने भोलेनाथ को प्रणाम किया और क्षीरसागर में विष्णुधाम पहुँच गये। अपनी परेशानी से अवगत कराया और कहा, "प्रभु आपने इतना धन–वैभव पृथ्वीलोक में दे दिया है कि लोग आराम से रह रहे हैं, मौज–मस्ती से रह रहे हैं। मृत्यु तो पास ही नहीं फटक पाती है।" "नहीं यमराज हमें आपका भी ध्यान है, आप गलत दोषारोपण कर रहे हैं। पृथ्वीलोक पर सबसे अधिक कृषक बसते हैं उनकी हालत ज्यों की त्यों है, अधिकांश कर्ज में डूबे हैं। फसलें खराब हो जाती हैं वह बराबर आत्महत्या कर रहे हैं और करते रहेंगे। इसमें कोई कमी नहीं होने देंगे। हाँ एक बात और है कुछ लोगों को इतनी अधिक सम्पत्ति दे दी है कि वह पाँच सितारा होटलों में धन को पानी की तरह बहा रहे हैं और शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोग अपने कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित जानकारियों को बढ़ाने का अधिकाधिक कोशिश करें। यहीं नहीं उपलब्ध सूचनाओं को कन्फर्म करना भी जरूरी है। प्रतियोगिता में सबसे अहम बात है, अपने–आपको ठीक से समझकर एंव पूरी उर्जा से सत्त प्रयास करना।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोगों के दुःख व तनाव का मुख्य कारण सिर्फ अनिर्णय की स्थिति है, और कुछ नहीं। यह समय आक्रमण करने का नहीं, बल्कि स्वयं को उर्जावान व सक्षम बनाने का है। पैतृक सम्पत्ति में बँटवारे की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मिथुन : आप–अपनी प्रतिभा को निखारने की कोशिश करें न कि दूसरों की नकल करके। अतीत में जीने से सिर्फ तनाव ही मिलेगा और कुछ नहीं। आप जिस चीज के पीछे जितना भागेंगे, वह चीज आपसे उतना ही दूर भागेगी।

कर्क : इस सप्ताह आप किसी वैवाहिक कार्यक्रम में शिरकत करेंगे किन्तु किसी विवाद में न पड़े वरना तनाव हो सकता है। लोग आपके व्यक्तित्व के कायल रहेंगे क्योंकि आप में जो बात है,वह हर किसी में कहां आ पाती है। इसलिए अपनी उपयोगिता बनायें रखें इसी में आप का हित होगा।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग पुरानी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे, परन्तु अपने ही टांग अड़ायेंगे। अनावश्यक वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित न करें। नवयुवक वाणी प्रयोग में सावधानी बरतें अन्यथा विवाद में पड़ सकते है।

कन्या : इस सप्ताह आप किसी गुप्त योजनाओं पर धन का व्यय करेंगे जिसके दूरगामी परिणाम लाभकारी प्रतीत हो सकते है। समय रहते समस्याओं पर ध्यान दें अन्यथा जब छोटी समस्या बड़ी समस्या का रूप ले लेगी तो दिक्कत होगी। कलात्मक कार्यो के प्रति विशेष रूचि बनी रहेगी।

तुला : इस सप्ताह वक्त के साथ जीवनशैली बहुत तेज बदल रही है, इसे थोड़ा सा नियन्त्रित करने की जरूरत है। आपके संयुक्त परिवार में विखंडन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आप–अपनी परम्पराओं व संस्कृति को संजाये हुये चल रहे है, यह एक बहुत बड़ी बात है।

वृश्चिक : इस सप्ताह परिस्थितियां प्रतिकूल रह सकती है। अवसर को भुनाने की कोशिश करना जरूरी है। कुछ कार्यो के पूर्ण होने से सार्थक परिणाम सामने आयेंगे। आर्थिक स्थितियों में पहले की अपेक्षा मजबूती आयेगी। कुछ भौतिक वस्तुओं की खरीद्दारी होने के आसार नजर आ रहे है।

धनु : बच्चें बड़ो को देखकर ही सीखते है,इसलिए आप को ऐसी हरकत न करें जिससे कि बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। समय और सम्बन्ध दोनों के प्रतिबद्धता अपनाना आपके लिए हितकर साबित होगा।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों को त्वरित निर्णय लेने की क्षमता बढ़ानी होगी। गैर सरकारी संस्थाओं से जुड़े लोग को भी नयी योजना बनाने से पूर्व अपने स्वविवेक का इस्तेमाल अवश्य करें। कुछ निज सम्बन्धों से लाभ व सहयोग की आशा नजर आ रही है।

कुम्भ : इस सप्ताह आर्थिक परिपेक्ष्य में किये गये कार्यो में बधायें समाप्त होकर सफलता मिलने के आसार नजर आ रहे है। ऑफिस के कार्यो में लोग आपका विरोध करेंगे किन्तु आपको सिर्फ रक्षात्मक रवैया ही अपनाना है। मानसिक तनाव में कुछ कमी आयेगी जिससे नयें कार्यो में मन लगेगा।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोगों को जोखिम भरे कार्यो से बचना होगा। आपकी सफलता का काफी हद तक दारोमदार आपके दृष्टिकोण, सोच और कार्यशैली पर निर्भर है। किसी भी समस्या को हल करने के लिए मन को केन्द्रित करना बेहद जरूरी है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।।

मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय हैः परन्तु जो भक्त मुझको प्रेम से भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ।।२६।।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।।

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभाव से मेरा भक्त होकर मुझको भजता है तो वह साधु ही माननेयोग्य है, क्योंकि वह यर्थाथ निश्चय–वाला है। अर्थात् उसने भलीभाँति निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है।।३०।।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है और सदा रहने वाली परम शान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।।३१।।

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।

हे अर्जुन! स्त्री, वैश्य, शूद्र तथा पापयोनि–चाण्डालादि जो कोई भी हों, वे भी मेरे शरण होकर परमगति को ही प्राप्त होते हैं।।३२।।

3

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता

दिनांक 08 मार्च से 14 मार्च 2017 तक

अध्यक्षीय

रिकार्ड पे रिकार्ड

एक ही राकेट से रिकार्ड १०४ उपग्रहों का प्रक्षेपण कर इसरो ने ना सिर्फ अंतरिक्ष में भारत की धाक जमा दी है बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को एक बड़ा और सफल वैज्ञानिक देश साबित करने का काम भी किया है। जिस देश की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संपेरों और भूखे–नंगों की बनायी गयी थी आज वह ना सिर्फ अपने बल्कि अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश के उपग्रह भी सफलता के साथ प्रक्षेपित कर रहा है। इसरो ने अपने इस अभियान के साथ रूस के एक साथ ३७ उपग्रह प्रक्षेपित करने के रिकार्ड को भी ध्वस्त कर दिया है। निश्चित रूप से भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के इतिहास में इस दिन को युगांतकारी दिन के तौर पर जाना जायेगा। पीएसएलवी–सी३७ की कक्षा में रिकार्ड १०४ उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण पर इसरो की पूरी टीम बधाई की पात्र है। इसरो के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों और इस महान अभियान से जुड़े अन्य लोगों ने देश के हर नागरिक को गौरवान्वित करने का काम किया है। इसरो ने भारतीय उपग्रहों को कक्षा में प्रवेश कराए जाने के बाद विदेशी ग्राहकों के अन्य १०१ नैनो उपग्रहों को श्रृंखलाबद्ध तरीके से कक्षा में प्रवेश कराया गया। आईएनएस–१ए और आईएनएस–१बी इसरो के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर और लेबोरेट्री फॉर इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स सिस्टम्स से कुल चार पेलोडों से लैस हैं, जिनका इस्तेमाल विभिन्न प्रयोगों में किया जाना है। काटरेसैट–२ श्रृंखला का उपग्रह ऐसी तस्वीरें भेजेगा, जो तटीय भू प्रयोग एवं नियमन, सड़क तंत्र निरीक्षण, जल वितरण, भू–प्रयोग नक्शों का निर्माण आदि कार्यो में शामिल होंगी। इस मिशन की अवधि पांच साल की है। इस मिशन के तहत भारतीय उपग्रहों के साथ गए १०१ सहयात्री उपग्रहों में से ९६ उपग्रह अमेरिका के हैं। इसके अलावा पांच उपग्रह इसरो के अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के हैं, जिनमें इजराइल, कजाखस्तान, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं। इसरो इसी साल मार्च में सार्क देशों के लिए भी उपग्रह प्रक्षेपित करने जा रहा है। साफ है कि दक्षिण एशिया ही नहीं एशिया में भी भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी धाक जमा ली है। इससे पहले पिछले वर्ष भी अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम में नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए भारत ने एक ही मिशन में पीएससलवी–सी३४ के माध्यम से २० उपग्रहों को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था। तब भी २० में से १७ सैटेलाइट विदेशी थे। वाकई यह गर्व का विषय है कि कभी अंतरिक्ष क्षेत्र में दूसरों पर निर्भर रहा भारत आज दूसरे देशों को सेवा प्रदान करने वाला प्रमुख देश बन गया है। इसरो का यह कहना कि पीएसएलवी के जरिये हम अंतरिक्ष प्रक्षेपण के बाजार के एक खास हिस्से पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं, देश को गर्व से भर देता है। यही नहीं जरा इसरो की सफलता पर अंतरराष्ट्रीय मीडिया की टिप्पणियों पर नजर दौड़ाएंगे तो पता चलेगा कि वाकई देश के वैज्ञानिकों ने कितना बड़ा काम कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया का कहना है कि भारत अंतरिक्ष आधारित सर्विलांस और संचार के तेजी से बढ़ते वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनकर उभरा है। वाशिंगटन पोस्ट ने कहा है कि यह प्रक्षेपण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के लिए यह एक और बड़ी सफलता है। कम खर्च में सफल मिशन को लेकर इसरो की साख अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बढ़ रही है। सफल प्रक्षेपण के संबंध में वाशिंगटन पोस्ट ने यह भी रेखांकित किया है कि भारत पहले भी दर्जनों उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण कर चुका है। द न्यूयार्क टाइम्स का कहना है कि एक दिन में उपग्रहों के प्रक्षेपण के पिछले रिकार्ड के मुकाबले करीब तीन गुना ज्यादा, १०४ उपग्रहों को प्रक्षेपण के बाद उनकी कक्षाओं में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है। इसने अंतरिक्ष आधारित सर्विलांस और संचार के बढ़ते व्यावसायिक बाजार में भारत को महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में स्थापित कर दिया है। अखबार का कहना है प्रक्षेपण में खतरा बहुत ज्यादा था क्योंकि १७००० मील प्रति घंटा की रफ्तार से जा रहे एक राकेट से जिस प्रकार प्रति कुछ सेंकेंड में गोली की रफ्तार से उपग्रहों को उनकी कक्षाओं में स्थापित किया गया है, उसे देखते हुए यदि एक भी उपग्रह गलत कक्षा में चला जाता तो वे एक–दूसरे से टकरा सकते थे। अमेरिका और रूस की प्रतिद्वंद्विता को भूल जाएं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में वास्तविक दौड़ तो एशिया में हो रही है। चीनी मीडिया ने भी अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की सफलता पर लिखा है। सरकारी संवाद समिति शिन्हुआ के अनुसार एक अंतरिक्ष मिशन में १०४ उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण कर भारत ने इतिहास बनाया है वाकई यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

इस ओर भी ध्यान दे सरकार

वर्ष २००८ में लीमैन ब्रदर्स जैसे बड़े बैंक के बंद होने के बाद अमेरिका तथा पूरे विश्व में जो आर्थिक मंदी आयी, उसका असर आज तक है। इस आर्थिक संकट के कारण विश्व स्तर पर व्यापक रूप से उत्पादन और विश्व व्यापार का नाश हुआ। ऐसी मंदी अस्सी साल के बाद आयी, लेकिन इसका प्रभाव लंबी अवधि के लिए बनता दिख रहा है। यह मंदी बेरोकटोक बैंकिंग के कारण आयी, आगे ऐसा संकट न आये, इसके लिए तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कानून और नियंम बनाये। इनमें प्रमुख है डोड–फ्रैंक वॉल स्ट्रीट रिफोर्मस एंड कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट, इस एक्ट के माध्यम से बैंकों की कार्य प्रणाली पर नियंत्रण रखने का प्रबंध किया गया है। अमेरिका का राष्ट्रपति बनते ही डोनाल्ड ट्रंप ने इस कानून को वापस लेने के लिए एग्जीक्यूटिव ऑर्डर पर हस्ताक्षर किया। ट्रंप और इस कानून के आलोचक कहते हैं कि इस कानून से उपजी लालफीताशाही के कारण बैंकिंग उद्योग से आम लोगों को सेवाएं मिलना कठिन हो गया है, ट्रंप खुद कह रहे हैं कि उनके परिचित कई उद्यमी अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं, लेकिन उन्हें डोड–फ्रैंक कानून के कारण बैंकों से ऋण मिलना कठिन हो गया है। बैंकिंग एक ऐसा उद्योग है, जिसमें कम पूंजी पर यानी बड़े लीवरेज के साथ बड़ा व्यवसाय किया जाता है, सरकारों के पास इतना धन नहीं होता है, जितना बैंकों के पास लोगों का जमा धन होता है। उदाहरण के तौर पर भारत का वर्ष २०१७–१८ का बजट व्यय लगभग २१.४६ लाख करोड़ रुपये का है। जबकि बैंकों के पास तीन फरवरी को कुल जमा राशि लगभग १०८.५६ लाख करोड़ रुपये थी। इस जमा राशि के बरक्स बैंकों ने कुल ७७.१३ लाख करोड़ का ऋण प्रदान किया हुआ है, बैंकों के पास इतनी ऋण राशि के लिए औसतन मात्र १३ प्रतिशत पूंजी है। बैंकों की विपुल जमा धनराशि का इस्तेमाल दुनिया के हर देश की सरकार करना चाहती है, जिससे विकास हो सके। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है। बैंकिंग व्यवसाय तलवार की धार पर चलना है यह एक ऐसा व्यवसाय है, जो उद्योग, व्यवसाय व अन्य हस्तियों की वित्तीय स्थिति पर आधारित है। अर्थव्यवस्था जब फलती–फूलती रहती है, तो सभी व्यावसायिक और गैर–व्यावसायिक हस्तियों की माली हालत भी ठीक बनी रहती है और बैंकों द्वारा इन हस्तियों को दिये गये ऋण का स्वास्थ्य भी बना रहता है। बैंक ऐसे माहौल में अधिक लाभ की आशा में अधिक से अधिक ऋण संवितरित करते हैं, भले ही इसके लिए थोड़ा खतरा क्यों न उठाना पड़े। जैसे ही अर्थव्यवस्था खराब होनी शुरू होती है, बैंकों का ऋण फंसना शुरू हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में बैंक ऋण भी बांटना कम कर देते हैं, जबकि ऐसे समय में ऋण की सख्त जरूरत होती है, जिससे उद्यम और व्यापार अपने व्यवसाय को संभाल कर अर्थव्यवस्था को पटरी पर ला सकें। यह चक्र चलता रहता है, इस अर्थ–चक्र के कारण बैंकों पर आने वाले खतरे को ध्यान में रखते हुए स्विट्जरलैंड स्थित बैंक फार इंटरनेशनल सेटलमेंट ने बासेल कमेटी फार बैंक सुपरविजन की स्थापना की, जो बैंकों के परिचालन के लिए विवेकपूर्ण मानदंड तय करता है। इन मानदंडों के बाद भी अमेरिकी बैंक खुद संकट में आये और पूरी दुनिया के लिए संकट खड़ा कर दिये। डोड–फ्रैंक कानून के माध्यम से बैंकों को परिचालन के लिए पूंजी की जरूरत को बढ़ा दिया गया है, बड़े बैंकों को तोड़ कर छोटा करने का प्रावधान किया गया है। इसी तरह से वोल्कर नियम, जिसे भी डोनाल्ड ट्रंप खत्म करना चाहते हैं। के माध्यम से बैंकों के ट्रेडिंग गतिविधियों पर भी नकेल कसी गयी है। इन कानून और नियमों के कारण बैंकों की असाधारण खतरा उठाते हुए प्राफिट कमाने की प्रवृत्ति पर रोक लगायी गयी है। अब जब ट्रंप डोड–फ्रैंक कानून को समाप्त करने की ओर अग्रसर हैं, तो स्वाभाविक है कि अंदेशा पैदा हो कि कहीं दुनिया फिर से किसी नये वित्तीय संकट में तो नहीं फंस जायेगी। दूसरी तरफ ढीले बैंकिंग नियमों के कारण बैंकों की कमाई में वृद्धि की आशा की वजह से शेयर बाजार में बैंकिंग शेयरों में तेजी देखने को मिली। बार्नी फ्रैंक, जो कि इस कानून को तैयार करने वालों में शामिल रहे हैं, ने कहा है कि बिना कांग्रेस की अनुमति के कानून में कोई बड़ा परिवर्तन कर पाना संभव नहीं होगा। ट्रंप के आदेश में भी परिवर्तन की संभावना तलाशने को कहा गया है। यह घटना सिर्फ अमेरिका के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है, पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था की नाल अमेरिका की अर्थ–नाभि से जुड़ी हुई है। दुनियाभर के बैंकों को प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अपने घर में बैंकिंग नियमों में ढील देनी पड़ेगी। लेकिन केंद्रीय बैंकों के लिए मुद्रा नियंत्रण एक मुश्किल काम हो जायेगा, खास कर उन देशों में जहां ब्याज दर को और नीचे ले जाने की कम गुंजाइश है। बैंकिंग सुपरविजन एक मुश्किल भरा काम हो जायेगा। बासेल कमेटी के निदेर्शों को कड़ाई से लागू कर बैंकों को पहले से तैयार रखना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था के उतार–चढ़ाव के चक्र को देखते हुए काउंटर साइक्लिक बफर कैपिटल का इंतजाम पहले से करके रखना पड़ेगा। ट्रंप के कदम से सिर्फ बैंक ही नहीं सरकारें भी दबाव में आ जायेंगी, क्योंकि बैंक अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं। लेकिन सबसे ज्यादा जिस फ्रंट पर काम करने के लिए सरकारों पर दबाव पड़ेगा, वह है विकास। औद्योगिक और कृषि उत्पादन बढ़ाना पड़ेगा। नये रोजगार पैदा करने पड़ेंगे, इसके लिए सरकार और बैंकों को मिल कर काम करना पड़ेगा। सबसे ज्यादा जरूरी है जरूरतमंदों को पूंजी के रूप में बैंकों से आसान ऋण मिल सके, जिससे उद्यमी–व्यवसायी अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे सकें, यह पहले अंडा हुई या मुर्गी के कहावत को चरितार्थ करनेवाली स्थिति है। इस बिंदु पर डोनाल्ड ट्रंप सही हो सकते हैं कि बैंक ऋण के बिना अर्थव्यवस्था में विकास नहीं हो सकता है।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

मलेरिया

डॉ. अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव

भारत में इन दिनों मलेरिया का प्रकोप काफी हो रहा है। विश्व में १,५०,००,००० लोग ऐसी जगहों पर रहते हैं, जहाँ उनमें मलेरिया होने का भय बना रहता है। हम जब ऐसे क्षेत्रों में जाते हैं तो रोगाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। पर रोग के लक्षण उस समय तो नहीं बल्कि काफी समय बाद दिखाई देते हैं। विश्व के कुछ देश तो इससे पूरी तरह छुटकारा पा चुके हैं, पर कुछ देश छुटकारा पाने के लिए सतत् प्रयत्नरत हैं। यह रोग ठंडे प्रदेशों की बजाय गर्म प्रदेशों में अधिक होता है।

मलेरिया होने के कारण : जो परजीवी इसे फैलाता है, उसे प्लाज्मोडियम कहते हैं। मानव में जो मलेरिया विभिन्न जाति के मच्छरों द्वारा फैलता है, उनको चार प्रकार में विभाजित किया गया है। जैसे–प्लाज्मोडियम फैल्सीपैरम, प्लाज्मोडियम मलेरिया, प्लाज्मोडियम वाइवेक्स तथा प्लाज्मोडियम ओवल। उपरोक्त चारों में से प्लाज्मोडियम वाइवेक्स और प्लाज्मोडियम ओवल एक ही प्रकार का बुखार उत्पन्न करते हैं। प्लाज्मोडियम फैल्सीपैरम शीघ्र ठीक भी होता है और इसके बढ़ने की संभावना भी अधिक होती है। इसे तृतीयक ज्वर भी कहते हैं यानि इसमें हर तीसरे दिन रोगी को तेज बुखार होता है। रोग के अन्य तीनों प्रकार उतने गंभीर नहीं होते, उनमें कुछ समय के अंतराल पर बुखार होता है। कई बार तीनों प्रकारों में रोग के परजीवी यकृत में काफी समय तक जीवित रहते हैं जो लम्बे समय के बाद दोबारा और इतने तीव्र रूप में रोग को उभारते हैं कि रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

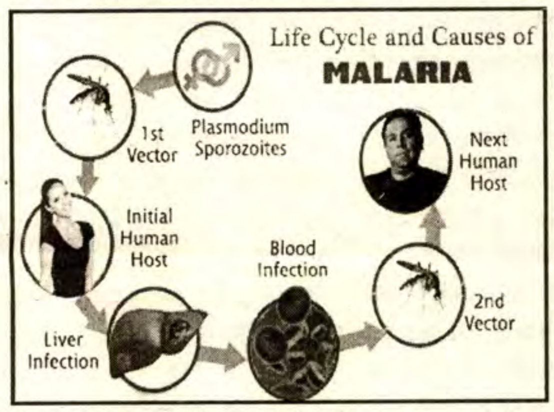

रोगाणुओं का जीवनचक्र : मादा एनाफिलीज नामक मच्छर इस रोग को फैलाने में मुख्य भूमिका निभाती है। मादा मच्छर ऐसे व्यक्ति को काटती है जो मलेरिया से ग्रस्त रहता है, जिससे रोग के जीवाणु मच्छर के आमाशय में पहुँच जाते हैं। वहाँ ये जीवाणु अंडों को उत्पन्न करते हैं, जो मादा मच्छर के आमाशय की दीवार में चिपके रहते हैं और वहाँ से उसके मुँह में आ जाते हैं। जब यह मादा मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटती है तो रोग के जीवाणु उसके द्वारा व्यक्ति में प्रवेश पा जाते हैं और उस व्यक्ति के यकृत में ये अंडे कुछ समय तक रहते हैं। करीब एक सप्ताह के बाद ये अंडे व्यक्ति के रक्त में फैल जाते हैं और उसके बाद रोग के कई लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

लक्षण : ऐसे क्षेत्रों में जहाँ यह रोग बार–बार होता है तो वहाँ के निवासियों में इस रोग से लड़ने की क्षमता पैदा हो जाती है, पर इस क्षेत्र में नये व्यक्ति के जाने पर उनके शीघ्र रोग की चपेट में आने की संभावना होती है। इस रोग में सामान्य लक्षण के रूप में बुखार होता है। जब रोग की शुरूआत होती है तो बुखार लगातार रहता है, पर जैसे–जैसे यह बढ़ता है, वैसे–वैसे नए लाल रक्तकण के बनने के चक्र में बाधा उत्पन्न होती है और जो नया रक्तकण बनता भी है, वह भी उससे संक्रमित हो जाता है और इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। कुछ स्थितियों में बुखार के साथ ठंड भी लगती है।

प्लाज्मोडियम मलेरिया से तीसरे दिन बुखार आता है, जो शाम को बढ़ जाता है।

> **इस रोग में सामान्य लक्षण के रूप में बुखार आता है। जब रोग की शुरूआत होती है तो बुखार लगातार रहता है, पर जैसे-जैसे यह बढ़ता है, वैसे-वैसे नए लाल रक्तकण के बनने के चक्र में बाधा उत्पन्न होती है और जो नया रक्तकण बनता भी है, वह भी उससे संक्रमित हो जाता है।**

प्लाज्मोडियम वाइवेक्स और प्लाज्मोडियम ओवेल से हर दूसरे दिन बुखार होता है। मलेरिया में जो बुखार होता है, उसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं। पहली अवस्था में ठंड लगती है। दूसरी अवस्था में गर्मी लगती है और तीसरी अवस्था में खूब पसीना आता है, जिसके बाद ही रोगी के शरीर का तापमान सामान्य होने लगता है। मलेरिया में बुखार के अलावा तेज सिरदर्द, कमजोरी का अनुभव होता है। इसमें रोगी एनीमिया का शिकार हो जाता है और उसके प्लीहा तथा लिवर के आकार में वृद्धि हो जाती है।

रोग की भयानकता : प्लाज्मोडियम फैल्सीपैरम से बुखार लम्बे समय तक रहता है। कई बार तो उपचार न होने पर मस्तिष्क पर बुखार का असर होता है, जिससे दौरा पड़ता है। हल्की नींद व थकान महसूस होती है। कई बार बेहोशी भी आ जाती है। तीव्र मलेरिया से लीवर में तेज संक्रमण फैल जाता है, जिससे लक्षण हेपेटाइटिस या डिसेंट्री में परिवर्तित हो जाता है। मलेरिया के कारण गुर्दे के काम में बाधा उत्पन्न हो जाती है जो काफी खतरनाक स्थिति होती है।

बचाव : अपने चिकित्सक से सलाह ले लें। मच्छरों से बचने के लिए रात में मच्छरदानी लगाकर सोना चाहिए। मच्छर भगाने वाली मच्छर अगरबत्ती को जलाएँ। गर्भवती महिला को यह रोग हो जाए तो उससे बच्चे के संक्रमित होने की संभावना रहती है। मलेरिया के मच्छर गंदगी व जहाँ पानी भरा है वहाँ पनपते हैं, अतः घर के आसपास की गंदगी व नाली को साफ रखना चाहिए।

अनुपम जड़ी-बूटी : पतंग

डॉ. एन.के. द्विवेदी

प्रकृति मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पाने में सहयोग करने हेतु उसे सदैव स्वस्थ रखना चाहती है और उसके लिए नाना प्रकार की स्वास्थ्यवर्द्धक जड़ी–बूटियों को अपनी गोद में पाले रखती है। इन जड़ी–बूटियों में से एक है पतंग। यह वनस्पति जगत में 'सीजनपिनियोडी' उपकुल तथा फेबेसी (शिम्बी) कुल का मध्यम आकार का वृक्ष है। इसे संस्कृत में कुंचदंन, पतंग, रक्तकाष्ठ, पटरंजनः हिन्दी में पतंग, बकम, आल तथा लेटिन में 'सीजलपीनिया सप्पन' कहते हैं।

वानस्पतिक परिचय : पतंग करीब चार से आठ मीटर ऊँचाई वाला झाड़ीनुमा थोड़े कांटेदार वृक्ष है। आठ वर्ष की परिपक्व आयु वाले वृक्ष का तना १५–२० सेमी. के घेरे का होता है। उस पर दूर–दूर कांटे लगे होते हैं। नई शाखाएँ कुछ लोहे की जंग जैसी रूएंदार होती हैं। पत्तियाँ २०–३५ सेमी. लम्बी, १०–२० सेमी. चौड़ी,व 'स्टिपुलेट', बाइपिन्नेट, अल्टरनेट तथा ८–१६ जोड़ियों में होती है। विभाग ४ से ६ इंच लम्बे, लगभग वंतरहित होते हैं। तलभाग के पान छोटे तथा कांटेयुक्त होते हैं। पुष्प २ से ३ सेमी. व्यास के ३०–४० सेमी. लम्बी विभाजित पुष्प रचना में सजे हुए तेजस्वी गंधयुक्त पीले रंग के होते हैं। पुष्पान्तर कोष की पंखुड़ियाँ ऊपर पीली, तले में लाल दाग वाली होती हैं। पुंकेशर संख्या में दस होते हैं। अण्डाशय 'सुपिरियर' रोंयेयुक्त होता है। फली ७–१० सेमी. लम्बी, ३–५ सेमी. चौड़ी, चपटी, मोटी 'ग्लेबरस' विशिष्ट वोंच वाली, कठोर, टेढ़ी लम्बगोल, तेजस्वी, चमकदार, भूरी होती है। एक फली में १८–२० मिमी. लम्बे, १०–१२ मिमी. चौड़े, कठोर, भूरे, लाल–भूरे ३–४ बीज पाये जाते हैं। फल तीन महीनों में पकते हैं। इसकी पकी लकड़ी से लाल रंग मिलता है।

उत्पत्ति स्थान : इसकी उत्पत्ति मध्य व दक्षिण भारत होते हुए इंडो–चायना से पेनिनसुलर मलेशिया है। यह जंगली रूप में दक्षिण भारत, उड़ीसा, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा आदि में पाया जाता है। इसकी खेती संपूर्ण ट्रोपिकल व सब–ट्रोपिकल एशिया में की जाती है।

रासायनिक संगठन : इसकी लकड़ी में टेनिक अम्ल व गेलिक अम्ल मिलते हैं। प्रोटोसेपोनिन, आयसोफ्लेवोनोइडस एवं मैथानोलिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

लकड़ी-रेडवुड उपयोगिता : लाल रंग का उत्पादन सूत, रेशम व गर्म कपड़े रंगने में तथा हैल्थ ड्रिंक बनाने में बहुपयोगी है। इसके चूर्ण को अरारोट में मिलाकर गुलाल तथा हरड़ में मिलाकर काली स्याही बनाई जाती है।

गुण-धर्म : आयुर्वेद के अनुसार पतंग औषध द्रव्य रस में कड़वा, शुष्क, मधुर विपाक, शीतवीर्य, व्रण शुद्धिकर है। यह स्तम्भक, कोष्ठ बंधक, शांतिकर, रूधिर रचना में सुधारक व वातप्रकोप, पित्तप्रकोप, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ, कफवृद्धि, अश्मरी, रक्तविकार को दूर करता है। यूनानी मत में इसकी लकड़ी अति कड़वी उरःक्षत (छाती व फेफड़ों) के रक्तस्राव को बंद करने वाली, नासूर, त्वचा के रंग को निखारने वाली तथा आमवात में हितावह है। नव्यचिकित्सा के मतानुसार पतंग की लकड़ी की क्रिया 'लोगवुड' के समान होती है अर्थात् ग्राही रक्त संग्राहक, गर्भाशय उत्तेजक व संकोचक, श्लेष्महर और व्रणरोपण है।

उपयोग : गुण दृष्टि से इसकी लकड़ी का क्वाथ बालकों व बड़ों के सौमजीर्ण, अतिसार, रक्तातिसार और जीर्ण पेचिस (डायरिया, डिसेन्टरी) में हितावह है। इसके सेवन से आंत्र की श्लेष्मिक कला की उग्रता शमन होती है, फिर रक्तस्राव कम होकर दस्त बंद हो जाता है और उदरपीड़ा शांत हो जाती है। श्वेत प्रदर पर इसका क्वाथ दिन में दो बार सात से पन्द्रह दिन तक, देते रहने पर पतला व गर्म शेष पृष्ठ 11 पर

लला फिर आइयो खेलन होली

✍ निर्मल कुमार मिश्र

होली का पर्व हमारा सांस्कृतिक पर्व है, जो कई सहस्त्र वर्षो से भारतीय जन–जीवन की चेतना में पूर्णतः घुलमिल गया है और रंग–अबीर की वह झोरी पिचकारी अमर हो गयी है। वस्तुतः बसंत का यह त्यौहार प्रतिवर्ष अपने साथ मस्ती का साम्राज्य लिये आता है और धरती के कण–कण में उल्लास, हास, प्रेम तथा सौन्दर्य बिखेर जाता है। फिर तो धरती का हृदय जुडा उठता है और उससे प्राण से वंशी की मधुर ध्वनि दिगन्त हो झंकृत करती हुई गूँज उठती है तथा धरती, आकाश, सूर्य, चाँद और सितारे एक आकर्षण की डोर में बँधे झूमने लगते हैं।

ब्रजभाषा की कोमलकान्त पदावली में अनेक कवियों ने इस त्यौहार का स्वागत किया है। विशेषतः देव, मतिराम, सेनापति, पद्माकर, प्रताप, भारतेन्दु की स्मृति घनी हो उठती है। भक्त कवियों, गायकों के कोमल कण्ठों में बैठकर होली साकार हो उठी–'सदा आनन्द रहे यहि द्वारे मोहन खेले होरी हो।' तो आइये पद्माकर के मधुर स्वर लहरी में ब्रज की विथियों में होली का आनन्द लें–भगवत् हृदयस्थ चन्द्रस्वरूपिणी

श्री वृषभानु नन्दिनी राधा रानी के महल में आज होली की बड़ी तैयारी है। सखियों द्वारा प्राप्त इस निमंत्रण को 'लला फिर आइयो खेलन होली' को पूर्ण करने ब्रजेश नन्दन श्री कृष्णचन्द्र अपने मित्र–मण्डली के साथ आज बरसाने पधारे हैं। सभी के हृदय में बस यही रंग है कि 'होली खेले बनाई तोरे संग रसिया' श्री वृषभान नन्दिनी अपने रंग महल से कन्हैया को आते देख रही है–

काँधा बन-ठन आये बरसाने।
रंग महल पर खड़ी लाड़ली,
सखी पिचकारीन ताने। काँधा.

कुँवर कान्ह को आते देख श्री महारानी लाड़ली जू सहेलियों के साथ अगवानी के लिये पधार गयीं। आज तो रंग की पिचकारियों से ही कान्हा का स्वागत हो रहा है।

पद :

आज विरज में होली रे, रसिया।। टेक।।
होरी रे, रसिया बरजोरी रे रसिया।। आज.....
कँहवा से आवे कुँअर कन्हैया,
कँहवा से राधा गोरी रे, रसिया।। आज......
गोकुल से आये कुँवर कन्हैया,
बरसाने की राधा गोरी रे रसिया।। आज.....
काँधा के हाथ कनक पिचकारी,
राधा के हाथ अबीर झोली रे रसिया

अबीर, गुलाल रोटी से समस्त ब्रजमण्डल ही लाल दिखलाई पड़ रहा है। गलियों में गुलाब जल, इत्र, केसर में घूलकर अबीर, गुलाल की तो सर्वत्र कीचड़ हो गयी है।

विविहि विच 'प्रताप' सिकच भये,
किच गुलाब अतर केसर
डफ धुधुकन की ध्वनि चहुँ दिशि धाये
कोउ नही काहु पहँचाने।
काँधा.......

सर्वत्र लाल ही कुँवर कान्हा की लाल झांकी का अवलोकन कीजिये भक्त प्रताप कवि के शब्दों में–कविता

नयन लाल बयन लाल अधर लाल विरी लाल
लाल लाल दसन हसन नेह की लगन में।
बीरा लाल, पगा लाल जरीके इजार लाल,
कँलगी सिर पेंच लाल मानिक नगन में।।
बाँसुरी बुलाक लाल केसर को ठौर लाल,
लाल लाल रंग लगे लालन के मुखन में।
ब्रज लाल, कुंज लाल, छत्र चँवर विजन लाल
सुखमा 'प्रताप' लाल बसी है दृगन में।।

होली के रस-संग में सखियों ने काँधा को नारी बना डाला श्री लाड़ली जू ने संकेत किया। 'रसिया को नारी बना वोरी'

फिर क्या, भली ऐसा संकेत पाकर भ्झी, चन्द्रावति सखी कब पीछे रहने वाली है, उसने विशाखा सखी को संकेत किया और देखते–देखते कुँवर कान्हा सखियों के बीच में घिर गये। प्रेम के बन्धन में बँधे नटवर को सखियों ने नारी बनाकर ही छोड़ा।

ब्रज में ऐसी होली मचाई।। टेक।।
इतते जब चन्द्रावती दौडी,
उतते विशाखा धाई। ब्रज में...
दोउकर गहे बिहारी जू के,
तब ललीला मुसकाई। ब्रज में..
लहँगा, चोली ओढ़नी ठाकर,
माथे पर बिंदिया लगाई। ब्रज में....

कुँवर कन्हैया का नारी श्रृंगार देखकर लाड़ली वृषभान नन्दनी राधा जी ने पूछ ही लिया–

हँस-हँस पूछन लगी लाडली,
बीर कहाँ ते आई।। ब्रज में...
मात-पिता ढिक है कौन तिहारो,
काफी है जू जाई।।ब्रज...
कन्हैया ने

शेष पृष्ठ 10 पर

मिजोरम स्थापना दिवस की ३० वीं वर्षगांठ
दिनांक २० फरवरी २०१७

❖ राजीव गांधी ने इसे २३ वाँ राज्य बनवाया था।

❖ यहाँ 90 प्रतिशत वे लोग हैं जो हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई धर्मी तो हो चुके हैं किन्तु चतुराई से अनुसूचित जनजाति की सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए अभी भी स्वयं को वनवासी ही कहते हैं।

❖ संविधान हिन्दू विरोधी और लचीला है तथा हिन्दू संगठन कमजोर हैं अतः अभी तक न तो विरोध किया है और न ही उच्च न्यायालय में जन हित याचिका दायर की है किसी ने।

❖ उग्रवादी मिजो संगठनों/चर्चों का, राज्य सरकार पर हर समय दबाव बना रहता है।

❖ अक्टूबर 1997 में उग्रवादियों ने, हिन्दू रियांग वनवासियों को, परेशान करके, राज्य से बाहर जाने को बाध्य कर दिया।

❖ तब से अभी तक, ये, त्रिपुरा के शिविरों में, शरणार्थी के रूप में, नरकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

❖ विधान सभा में ४० सीटे हैं। चुनाव आयोग ने 39 सीटे अनुसूचित जनजाति के लिए और एक सीट सामान्य रखी है जबकि सामान्य सीट ३६ और जनजाति के लिए ०४ सीटे होनी चाहिए।

❖ जो ईसाई हो गए हैं उन्हें सामान्य मानना चाहिए लेकिन गलती से उन्हें जनजाति मान रखा है। यह गलती ठीक कराई जानी चाहिए।

❖ जब पुलिस की आई० जी० बनकर किरण वेदी वहां गई थी तब उनके बच्चों को, स्कूलों में, यह कहकर दाखिला नहीं दिया गया कि बाहरी लोगों का दाखिला नहीं होता है। शर्म आनी चाहिए।

❖ सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के बावजूद, शरणार्थियों का पुनर्वास, उग्रवादी–पादरी नहीं होने दे रहे हैं।

निष्कर्ष

हमारी मांग है कि किसी शिक्षित हिन्दू रियांग शरणार्थी को, राज्य सभा का सदस्य बनवाया जाए या मनोनीत कराया जाए अथवा किसी राज्य का राज्यपाल बनवाया जाए। इससे शरणार्थियों का मनोबल बढ़ेगा और उनका पुनर्वास सम्भव हो सकेगा।

इन्द्र देव

दान/ सहयोग द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर
माह माघ विक्रमी सम्वत् २०७३

1.	अखिल भारत हिन्दू महासभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१	500/-
2.	हिन्दू सभा वार्ता (साप्ताहिक) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१	750/-
3.	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा/आर्य जगत साप्ताहिक मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१	2200/-
4.	आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, चौक बाजार, बुलन्दशहर	501/-
5.	दि मॉरल साप्ताहिक, २५/१६, कराची खाना, कानपुर–२०८००१	500/-
6.	गुप्त दान	200/-
7.	श्री आनन्देशवर मन्दिर, दान मण्डी के सामने, बुलन्दशहर	1001/-
8.	नगर आर्य समाज, ५/४६१, लक्ष्मी नगर, बुलन्दशहर	501/-
9.	श्री मद्दयानन्द कन्या गुरूकल महाविद्यालय, चोटी पुरा (अमरोहा)	2500/-
10.	राष्ट्रीय कोहिनूर साप्ताहिक, एटा	1000/-
	टोटल	9653/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संपादक, सावरकरवाद प्रचार सभा

शिक्षा के क्षेत्र में दो सदी से मैथिली ब्राह्मण बनारस व इलाहाबाद के सपने क्यों देखते हैं? मैथिली ब्राह्मणों की संस्कृत पठन-पाठन की अनूठी 'सोरठ' व्यवस्था

✍ हरिकृष्ण निगम

क्या कोई आज इस बात पर विश्वास करेगा कि मात्र एक सदी से पहले तक बिहार के मिथिला क्षेत्र के गाँव–गाँव में ब्राह्मणों की ऐसी कोई बस्ती नहीं थी जहाँ संस्कृत में वार्तालाप करने वाले अच्छे ब्राह्मण पाए जाते हों। दूर–दूर से छात्र शास्त्र पढ़ने, वेद–वेदांगों के ज्ञान के लिए यहाँ आते थे और अपने प्रांत व देश लौट जाते थे। संस्कृत पठन–पाठन की व्यवस्था सोरठ ब्राह्मणों में तिरहुत डिवीजन व मिथिला के बंगाल से लगे क्षेत्रों में स्वावलम्बी भी थी और विलक्षण भी। यहाँ आने पर छात्र सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे और विद्या देने वालों को परिवार–पोषण की चिंता नहीं रहती थी। उनका एकमात्र ध्येय विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाना ही होता था। वे किसी राजा–महाराजा या जमींदार से दान की याचना भी नहीं करते थे और वे द्रव्योपार्जन की अपेक्षा अपने घर पर अपने चौपाल पर पढ़ाते थे। शनैः शनैः मिथिला के व्याकरण, न्याय, वेदान्त, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा व ज्योतिष आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त करने वाले पंडितों का बोलबाला देश–देशान्तर में फैला था। दरभंगा के मधुबनी सब डिवीजन का सौरठ नामक स्थान इसलिए प्रसिद्ध हुआ कि यहाँ की महासभा में लाखों मैथिल ब्राह्मण हर वर्ष एकत्र होते थे जब पंडितों में कभी व्याकरण पर, कहीं तर्कशास्त्र या वेदांत पर शास्त्रार्थ छिड़ जाते थे और वहाँ शिक्षित समाज की भीड़ जुट जाती थी। शास्त्रार्थ में जिसकी पद्धति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी उसके गले में विद्वत मंडली फूलमाला डालकर उसे विजयी घोषित करता था। किसी–किसी देवस्थान में अनेक पर्वों में भी शास्त्रार्थ होता था। ज्योतिष शास्त्रों के पंडितों की लोकप्रियता इतनी थी कि वर्ष के अंत के पहले वे अपने गणित के क्षेत्रों के द्वारा पंचांग तैयार करवाते थे। उसकी जाँच के लिए दूसरे ज्योतिषी की चौपाल में जाकर ग्रह–गणित, तिथि–नक्षत्र आदि का मापदंड मिलाते थे। लगभग सन १९०० के इर्द–गिर्द तिरहुत डिवीज़न के मुजफ्फरपुर जिले के रईस रामेश्वर नारायण महया ने प्रसिद्ध ज्योतिषी नित्यानंद झा से पत्रा बनवा कर धर्मार्थ वितरण के लिए प्रकाशित किया था। वे इसे कई वर्षों तक अद्यतन कर शिक्षित समाज में बंटवाते थे। यहाँ तक कि १८९० में अंग्रेज कमिश्नर ने फोर्ट विलियम से अंग्रेजी का 'सौ साल का कैलेंडर' विदेशी बीमा कम्पनियों के लिए बनवाया था। उसे प्रत्येक अंग्रेजी तारीख की हिन्दी, तिथि, वार आदि को सन १९६० तक सामन के अलग–अलग कॉलमों में दिया गया था जो भारतीय जीवन बीमा निगम के राष्ट्रीयकरण के बाद तक उपयोग में लाया जाता था। मिथिला के पंचांगों को बिहार के प्रसिद्ध लेखक व पुस्तक भंडार के मालिक रामलोचन शरण सदैव प्रकाशित करते रहे थे। उनके पुत्र पटना के प्रोफेसर हरिमोहन झा के अनुसार सन १९४१ तक यह पंचांग शुद्धतापूर्वक, लोक–परोपकार के लिए उनके परिवार में उनके सामने छपता था।

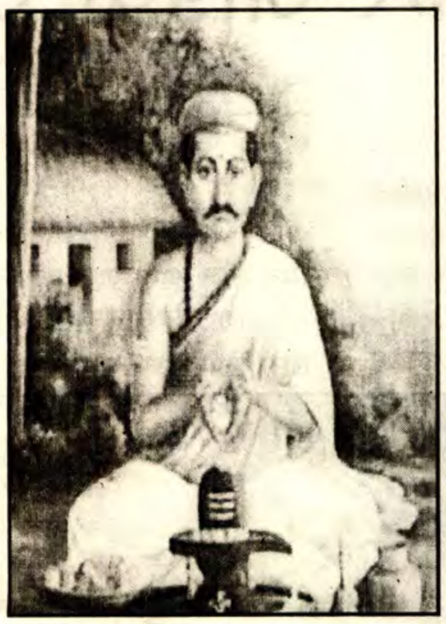

मिथिला के न्यायशास्त्र के रचयिता गौतम मुनि (दरभंगा जिले का ब्रह्मपुर गाँव), महर्षि याज्ञवल्कय (मिथिला के निकटवर्ती नेपाल राज्य का कुसुमा गाँव), सांख्य शास्त्र के प्रवर्तक कपिल मुनि (कपिलेश्वर महादेव का मन्दिर महाराजा सर रामेश्वर सिंह द्वारा निर्मित), मेडन मिश्र मीमांसक, दर्शनाचार्य वाचस्पति मिश्र (दरभंगा), वररुचि मिश्र, अभिनव वाचस्पति मिश्र, महामहोपाध्याय शंकर मिश्र, विद्यापति ठाकुर महेश ठाकुर, नीलाम्बर झा, सचल मिश्र आदि तो १८वीं शताब्दी के ख्याति प्राप्त विद्वानों के नाम हैं जिनकी सूची अंतहीन लगती है। यदि हम १९वीं व २०वीं सदी के विश्वविख्यात बुद्धिजीवियों की ओर दृष्टिपात करें तो एक ऐसे परिवार का नाम आता है जिसने अपनी पहचान देश के साथ–साथ बाहर भी बनाई थी।

उस महापुरुष का नाम था महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा जिनका जन्म दरभंगा के पाहीटोल ग्राम में हुआ था पर उन्होंने अपनी कर्मभूमि इलाहाबाद को बनाया था। अंग्रेजी के यशस्वी विद्वान होते हुए भी वे संस्कृत के लब्ध प्रतिष्ठ ज्ञाता व अनेक शास्त्रों में पारंगत थे। एक समय वे मिथिलाधीश महाराज लक्ष्मी सिंह बहादुर के लाइब्रेरियन थे। उसके बाद इलाहाबाद के क्योर सेन्ट्रल कॉलेज में व्याख्याता के रूप में नियुक्त हुए। १९१८ ई. में डॉ. वेनिस की मृत्यु के बाद वे बनारस के गनर्वमेंट संस्कृत कॉलेज के प्रिंसिपल नियुक्त हुए। १९२३ ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रथम वाइस चांसलर बनाए गए थे।

१९१० में उन्होंने त्रिवेणी संगम के निकट भूखंड खरीदकर 'मिथिला भवन' का निर्माण कराया था जहाँ विद्वानों का जमघट लगा करता था। यों गंगानाथ जी निरभिमानी व अत्यन्त लोकप्रिय थे। उनके रचित संस्कृत ग्रंथों में 'भक्ति–कल्लालिनी', शांडिल्य सूत्र की टीका, प्रसन्न राघव की टीका, न्याय भाष्य व मण्डन मिश्र कृत मीमांसानुक्रमणी की टीका प्रसिद्ध है। आपके द्वारा संस्कृत से अंग्रेजी व हिन्दी में अनूदित ग्रंथ अनगिनत हैं। अंग्रेजी में तो आपकी अनेक स्वतंत्र पुस्तकें भारतवेत्ताओं व पौर्वात्य अध्ययन के विशेषज्ञों द्वारा पढ़ी जाती है। मिथिला क्षेत्र में न्याय और मीमांसा और जैन दर्शन के अनेकान्तवाद के प्रचार की जो पुरातन परम्परा थी उसको डॉ. गंगानाथ झा आजीवन आगे बढ़ाते रहे थे।

दरभंगा के महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह बहादुर को अंग्रेज लोग भी अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते थे और हिन्दू मान के लिए किसी भी निर्णय लेने के पहले उनसे सम्पर्क करते थे। ऐसा उनके पिता महाराजा बहादुर सर लक्ष्मीश्वर सिंह के साथ भी सभी फोर्ट विलियम के अंग्रेज अधिकारी करते थे। सन १८८० में इलाहाबाद के कांग्रेस के अधिवेशन में जब उन्हें उपयुक्त स्थान नहीं मिला था तब उनका मन खट्टा हो गया था तब सर लक्ष्मीश्वर सिंह 'गवर्नमेंट हाउस' के निकट स्थित 'लाउडर कैसल' खरीद कर उसे कांग्रेस की स्वागत समिति के हवाले कर दिया था। वे अपनी उपेक्षा करने वालों के लिए भी अत्यन्त उदारमना थे। उनकी असामयिक मृत्यु दिसम्बर सन १८९८ में हो गई थी। तब कांग्रेस अध्यक्ष आनन्द मोहन बोस ने गहन शोक व्यक्त कर उनकी ठोस आर्थिक सहायता की भी चर्चा की थी।

चम्पारन जिले का बेतिया राज शुरू से ही सम्पन्न था और ब्राह्मणों की शिक्षा व अध्ययन के लिए मशहूर था। यहाँ पर बंगाल नागपुर रेलवे स्टेशन होने से राजभवन, राज अस्पताल और राज लाइब्रेरी प्रसिद्ध हो चुकी थी। पहले यहाँ के राजा विद्रोही माने जाते थे। बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान ने बिहार के नायब नवाब मुस्तफा खान के साथ बेतिया पर चढ़ाई की थी। मीर कासिम और सर राबर्ट बार्कर ने भी बेतिया नरेश को अपने अधीन कर लिया था। सन १७६६ में राजा ध्रुवसिंह की मृत्यु होने पर राजा युगल किशोर सिंह गद्दी पर बैठे थे। उन्हें ईस्ट इंडिया कम्पनी को कर न चुकाने के लिए सन १७७१ ई. में युद्ध करना पड़ा था। अंत में संधि हो गई और कम्पनी ने फिर चम्पारन के 'मफौआ' और 'सीयाराम' परगने इनको सौंप दिए। उस समय के राजवंश में ही भारतेन्दु हरिश्चंद्र, राजा शिवप्रसाद सितार–ए–हिन्द आदि बड़े लोगों को भी राज्याश्रय व आर्थिक सहायता मिलने लगी थी। मुजफ्फर जिले का शिवहर व शाहाबाद जिले का डुमरांव भी मैथिली ब्राह्मणों की परम्पराओं को जीवित रखने में योगदान देते थे। विस्मय की बात है लगभग इस सारे कालखंड में बनारस या इलाहाबाद मैथिली ब्राह्मणों की गतिविधियों का केन्द्र बना रहा था। सर गंगानाथ झा के बाद अमरनाथ झा जो उनके पुत्र थे ये भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अधिवक्ता (वाइस चांसलर) बने, यह भी कम विस्मय की बात नहीं है। कभी–कभी तो आश्चर्य होता है कि मिर्जापुर के निवासी डॉक्टर काशीप्रसाद जायसवाल जो पटना को अपनी कर्मभूमि बनाकर के.पी. जायसवाल इंस्टीट्यूट को अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के पुरातत्व संबंधी अनुसंधानों का केन्द्र बना चुके थे और यावज्जीवन बिहार में रहे थे वे भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से जुड़े रहे। हिन्दू पालिटी, मनु एंड याज्ञवल्लय, इम्पीरियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया नामक ग्रंथों व बिहार, उड़ीसा रिसर्च सोसायटी के लिए उन्हें दुनिया भर में यश मिला था। उन्हें महामहोपाध्याय, विभा महोदधि आदि की उपाधियाँ भी मिली थीं क्योंकि वे मैथिली भाषा के भी अधिकार प्राप्त विशेषज्ञ कहलाते थे।

जहाँ तक सर गंगानाथ झा, प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर का प्रश्न है वे अंग्रेजी, संस्कृत, फ्रेंच, हिन्दी, मैथिली, बंगला भाषा में भी निष्णात थे। उन्हीं के द्वितीय सुपुत्र अमरनाथ झा थे। आप सर्वप्रथम भारतीय रहे थे जिन्हें पेरिस विश्वविद्यालय ने अपना फेलो चुनकर सम्मानित किया था। तात्पर्य यह है कि आज भी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनेक मैथिली विद्वान बनारस के बाद यदि किसी दूसरी जगह को अपनी गतिविधियों के लिए चुनते रहे हैं तो यह है

शेष पृष्ठ 11 पर

पाकिस्तान से निपटने के हमारे हथियार

जोरावर दौलत सिंह

इस्लामाबाद व रावलपिंडी द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का मुकाबला पुराने तरीकों से करने पर कामयाबी नहीं मिलेगी, हमें कुछ नया आजमाना होगा।

कश्मीर की हालिया घटनाओं ने भारत के लोगों को एक बार फिर से यह स्मरण कराया है कि आतंकवाद उसकी सरजमीं से बहुत दूर पश्चिम एशिया का ही मसला नहीं है बल्कि यह एक ऐसी समस्या है, जिससे उनका एक सूबा और लोग दशकों से जूझ रहे हैं। मोदी सरकार में ऊँचे पदों पर बैठे लोगों के अनेक बयान इस बात का संकेत दे रहे हैं कि नई दिल्ली एक बार यह मान रही है कि इस क्षेत्र में आतंकी चुनौती मौजूद है।

हालांकि, हमारे इरादे स्पष्ट हैं, लेकिन जिन नीतियों पर हम टिके हुए हैं, उनसे जमीनी हालात में कोई सुधार नहीं होने वाला। भारत पाकिस्तान प्रायोजित दहशतगर्दी का मुकाबला तो कर रहा है, मगर उसने अपना एक हाथ पीछे खींच रखा है। विभिन्न कारणों से एक के बाद एक दूसरी सरकारों ने अपनी सीमा क्षेत्र में छद्म आतंकवाद से मुकाबले पर अपना ध्यान केन्द्रित रखा, उन्होंने ऐसी कोई नीति नहीं तैयार की, जिसमें इस समस्या की सीमा पार की जड़ से निपटने की बात भी शामिल हो।

इस संघर्ष में पारंपरिक सैन्य विकल्पों और कूटनीति दोनों के प्रभाव सीमित हैं। जैसे, पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए कभी–कभी सीमा पार चिह्नित लक्ष्यों पर हवाई या मिसाइल हमलों के विकल्प पेश किए जाते हैं, लेकिन ये विकल्प शायद ही पाकिस्तानी फौज को कोई ऐसी चोट दे पाएँगे, जो उसे लंबे वक्त तक महसूस हो, बल्कि बहुत मुमकिन है कि ऐसी घटनाओं का इस्तेमाल वह अपने समर्थन–आधार को मजबूत बनाने में कर ले। इसमें कोई दो राय नहीं कि सीमित पारंपरिक विकल्प साल २००८ के मुंबई हमले जैसे आतंकी दुस्साहसों को रोक सकते हैं। एक सीमित युद्ध का विकल्प या सीमा पार करके तेजी से हवाई हमला बोलने की क्षमता पाकिस्तानियों को अपनी सीमा से अधिक घातक व अखिल भारतीय स्तर पर छद्म युद्ध छेड़ने से रोकने का काम करती है, लेकिन छोटे छद्म युद्धों और कश्मीर में और उसके बाहर परदे के पीछे से जारी उसकी शातिर जंग के लिए पारंपरिक सक्रियता एक अरुचिकर विकल्प है। बड़ी ताकतों पर केन्द्रित कूटनीति की सीमाएँ भी दिख चुकी हैं। पाकिस्तान का संरक्षक कोई भी देश किसी भी सार्थक कार्रवाई में भारत के साथ सहयोग को तैयार नहीं है। हमने देखा है कि चीन का सत्ता प्रतिष्ठान सार्वजनिक रूप से पाकिस्तान की निंदा करने से बचता रहा है। बल्कि अमेरिका जैसे हमारे रणनीतिक साझीदार देश भी जब भारत केन्द्रित आतंकवाद की बात आती है, तो जबानी हमले बोलने में ज्यादा मुस्तैदी दिखाते हैं, वास्तविक कदम उठाने में नहीं। हाल के अमेरिकी बयानों पर जरा गौर कीजिए। प्रभावशाली अमेरिकी सीनेटर जॉन मैक्केन ने हाल ही में एक लेख में लिखा है कि 'आतंकवाद के मुकाबले परमाणु सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के लिहाज से अमेरिका व पाकिस्तान के हित जुड़े हुए हैं और वे बेहद महत्त्वपूर्ण हैं।' मैक्केन ने आतंकवाद के खिलाफ पाकिस्तानी फौज के प्रयासों की भी बढ़–चढ़कर तारीफ की है।

और भारत–पाकिस्तान द्विपक्षीय कूटनीति की स्थिति क्या है? इस मामले में एक निरंतरता दिखाई देती है। भारत की कई सरकारों ने तरह–तरह के उपायों के जरिये पाकिस्तानी रियासत और सिविल मिलिट्री रिश्तों को प्रभावित करने का प्रयास किया। कई सरकारों ने आशावादी रुख अपनाते हुए यह सोचा कि लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित एक सरकार के साथ बातचीत का मतलब होगा पाकिस्तानी फौज की हैसियत कम करना। लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं है, जो यह साबित करे कि इस दृष्टिकोण का भारत को कोई फायदा मिला। बल्कि सबूत इस बात की तस्दीक करते हैं कि पाकिस्तानी फौज ने विदेश नीति और सुरक्षा संबंधी नीतियों पर अपना दबदबा बनाए रखा है और भारत–पाक के बीच उच्चस्तरीय संवादों का इस्तेमाल उसने भारत में घातक आतंकी हमलों के लिए ही किया। अब यह एक पैटर्न बन चुका है : भारत जनता से जनता की कूटनीति में बंधता है और अपने यहाँ छद्म युद्ध का विस्तार कर लेता है।

बहरहाल, पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने के उत्साही प्रयासों के हिंसक विपरीत परिणामों को एक तरफ रख दें तो भारतीय नीति–नियंताओं को अपने आप से जरूर पूछना चाहिए कि पाकिस्तान को लेकर वाकई उनकी रणनीति क्या है? निस्संदेह, सौदेबाज की मेज पर हरेक पार्टी अपने साथ कुछ न कुछ लेकर आती है। नकारात्मक रूप में यह चीज कोई दबाव या प्रतिबंध हो सकती है, या फिर सकारात्मक रूप में आर्थिक सहयोग या पूँजी हो सकती है। लेकिन भारत और पाकिस्तान के मामले में इस लिहाज से भी असंतुलन दिखता है। पाकिस्तान के लिए आतंकवाद एक ऐसा औजार है जिसके जरिये वह भारत को उलझाए रखता है, इसके सरहदी सूबों में अस्थिरता पैदा करता है और कश्मीर व दूसरे विवादों में वह इसे अपने लिए रियायत झटकने के लिए दबाव बिन्दु के तौर पर इस्तेमाल करता रहा है। पाकिस्तान के लिए दहशतगर्दी उसकी ताकत बढ़ाने वाली चीज है। यह उसकी विदेश नीति का स्वाभाविक हिस्सा है, और कुल मिलाकर सौदेबाजी का तरीका है। लेकिन भारत की तरफ से कुछ भी नहीं हो रहा, क्योंकि जाहिर–सी बात है कि वह न तो कश्मीर घाटी में किसी क्षेत्र के साथ अलग होने जा रहा है और न किसी दबाव में अपनी विदेश नीति में कोई तब्दीली ही करने जा रहा है। हम सिर्फ आर्थिक गतिविधियों और व्यापार में दिलचस्पी दिखाते हैं। लेकिन हमारी ये कवायदें पाकिस्तानी फौज को लुभाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, ताकि वह दहशतगर्दी को तवज्जो देना कम कर दे। मैं यहाँ यह भी कहना चाहता हूँ कि पाकिस्तानी इलाकों में चीन की बढ़ती आर्थिक भूमिका भारत के आर्थिक रिश्तों के जरिये संबंध सुधारने की संभावना को और कम कर देगी। हम जिस तरह के आतंकवाद से मुकाबिल हैं, वह एक देश प्रायोजित, विचारधारा –प्रेरित और काफी निर्मम किस्म का है, और इसका मुकाबला हम गैर– पारंपरिक तरीके से ही कर सकते हैं। मगर चूँकि आज भी गैर–पारंपरिक विकल्पों को लेकर हम मौन हैं, इसलिए हमारा पूरा जोर कूटनीति या फिर अपनी ही जमीन पर आतंकियों से लड़ने पर है। यह रक्षात्मक रणनीति दरअसल हमारी रणनीतिक कल्पनाशीलता की नाकामी और हमारे कमजोर निश्चय की परिचायक है। लेकिन अगर हम दबाव के बिन्दुओं को बदल दें, जो पाकिस्तानी फौज और उसके आतंकी मोहरों के लिए महंगे साबित हो सकें, तब क्या होगा? बलूच और पख्तून, दो स्वाभिमानी कबीलाई समूह दशकों से पंजाबी दबदबे वाली फौज के उत्पीड़न के शिकार हैं। उन्हें नैतिक और संसाधन दोनों तरह के समर्थन की दरकार है। पाकिस्तान के साथ किसी बातचीत से पहले बलूचों और पख्तूनों की जरूरतों को संतुलित रूप से उठाकर पाकिस्तान के रवैये में फर्क पैदा किया जा सकता है। भारत को पाकिस्तान से सौदेबाजी करत समय कुछ ठोस चीजें अपने साथ लेकर मेज पर बैठना चाहिए। उनके पास तो सीमा पार आतंकवाद का रणनीतिक अस्त्र है, हमारे पास क्या है?

सार्वजनिक होगा नाथूराम गोडसे का बयान, सीआइसी ने दिया आदेश

आशुतोष बंसल ने अपनी याचिका में गांधी हत्याकांड मामले में गोडसे के बयान सहित चार्जशीट व अन्य दस्तावेजों को उपलब्ध कराने की मांग दिल्ली पुलिस से की थी। जिस पर कोई कार्यवाही और जवाब नहीं मिलने पर प्रार्थी ने सूचना के अधिकार के तहत अपीलीय आवेदन केन्द्रीय सूचना आयोग में किया जिस पर अपने आदेश में केन्द्रीय सूचना आयोग सीआइसी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हत्याकांड मामले की सुनवाई के दौरान हत्यारे नाथूराम गोडसे द्वारा दिए गए बयान को सार्वजनिक करने के लिए कहा है। साथ ही उसने इससे संबंधित दस्तावेजों को भी सार्वजनिक करने का निर्देश दिया है। आयोग ने आदेश दिया है कि गोडसे के बयान और संबंधित दस्तावेजों को राष्ट्रीय अभिलेखागार की वेबसाइट पर प्रदर्शित किया जाए। सूचना आयुक्त श्रीधर आचार्युलु ने आशुतोष बंसल की याचिका पर उपरोक्त आदेश दिया। उनका कहना था, नाथूराम गोडसे और अन्य आरोपियों के विचारों से असहमत हुआ जा सकता है लेकिन हम उनके विचारों को सार्वजनिक होने से नही रोक सकते हैं। आशुतोष बंसल ने अपनी याचिका में गांधी हत्याकांड मामले में गोडसे के बयान सहित चार्जशीट व अन्य दस्तावेजों को उपलब्ध कराने की मांग दिल्ली पुलिस से की थी। जवाब में दिल्ली पुलिस ने बताया कि सभी दस्तावेज राष्ट्रीय अभिलेखागार को सौंप दिए गए हैं। उसने बंसल की अर्जी को अभिलेखागार के पास भेज दिया। अभिलेखागार ने याचिकाकर्ता को दस्तावेजों का परीक्षण कर जरूरी सूचना हासिल कर लेने के लिए कहा। जब कोई जानकारी नही मिली तो बंसल ने सीआइसी का दरवाजा खटखटाया। आयोग ने राष्ट्रीय अभिलेखागार को निर्देश दिया कि वह गोडसे के बयान और चार्जशीट की प्रमाणित प्रति बंसल को २० दिन के भीतर उपलब्ध कराए। वहीं आरएसएस नेता ने कहा, गांधी जी की हत्या के समय कांग्रेसी था नाथूराम गोडसे

ललित मैनी

वन्दे मातरम् एण्ड इस्लाम

प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

सूरा 'यासीन' ३६:१

''कसम है हिकमत वाले इस कुरान की''

यह कसम मुहम्मद द्वारा इस बात का यकीन दिलाने की खिलाई गई है कि कुरान वास्तव में अल्लाह का उतारा हुआ है। वास्तविक यह है कि यह आयत मक्का की उस समय की है जबकि ६६६० आयतों में से कुछ आयतों का उतरना ही बताया गया है। तब तक तो आयतों के इस संकलन का नाम भी 'कुरान' नहीं पड़ा था।

सूरा 'साँद' ३८:

''कसम है नसीहतभरे कुरान की''

मुहम्मद ने यह कसम यह बताने की खाई कि जो लोग कुफ्र कर रहे हैं वे ही उसका विरोध कर रहे हैं।

सूरा 'अज-जुख्रूफ ४३:१

''कसम है इस स्पष्ट किताब की''

''पद–टीप में बताया गया है कि मुहम्मद ने यह कसम इस बात का विश्वास दिलाने को खाई है कि कुरान मनुष्य की रचना नहीं वरन् अल्लाह की ओर से उतरी है।

सूरा 'अद -दुखान' ४४:

''कसम है इस स्पष्ट किताब की''

मुहम्मद फिर इस किताब (कुरान) की कसम खाते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि यह पूरी किताब अभी तक कहीं नहीं थी। ऊपर भी पहले तीन बार मुहम्मद इसी तरह की कसमें खा चुके हैं।

सूरा 'काफ' ४५:१

''काफ कसम है कुरान मजीद की''

यह कसम मुहम्मद ने यह बताने के लिए खाई कि मैं ही अल्लाह का संचेतक हूँ।

सूरा 'अज-जारियत' ५१:१

''कसम हैं उन हवाओं की जो उड़ती फिरती है''

यह कसम मुहम्मद यह बताने को खा रहा है कि वह सच बोल रहे हैं। अब मुहम्मद यहाँ से कुरान की कसमें खाना छोड़कर दूसरी प्राकृतिक नियामतों (जैसे हवा) की कसम खाना प्रारम्भ करते हैं।

सूरा 'अत-तूर' ५२:१

इसका वर्णन प्रारम्भ में किया जा चुका हैं

सूरा 'अन-नज्म' ५३:१

''कसम है तारे की जब वह नीचे आये''

'नीचे आये तारे' की व्याख्या डूबते तारे की बताई गई। पद्–टीप से स्पष्ट होता है कि यह कसम अल्लाह द्वारा यह बताने के लिए खाई गई है कि मुहम्मद कभी नहीं भटके और लोगों को वह जो सन्देश पहुँचा रहे हैं वह 'ऊपर से' आ रहा है। इस सूरा की भूमिका में व्याख्या करते समय लिखा गया है ''जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह तुम्हें दोबारा पैदा करने की सामर्थ्य रखता है। ''देखा जाये तो यह व्याख्या पुनर्जन्म में आस्था को प्रकट करती है, जिसकी मुहम्मद डूबते तारे की कसम खाकर पुष्टि करते हैं।

सूर'अल -वाकिअ' ५६:७५

''मैं कसम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की,

और यह बहुत बड़ी कसम है.''

अब मुहम्मद हवाओं की कसम छोड़कर फिर सितारों की कसम खाते हैं, परन्तु यह कसमें बड़े विचित्र रूप में उन्होंने 'सितारों की स्थितियों' की खाई है। व्याख्या की गई है कि सितारे विभिन्न स्थितियों से गुजरते हुएं अल्लाह को सजदा करते हैं। यह कसम यही बताने की है।

सूरा 'अल-कलम' ६८:१

''कसम है कलम की और जो वो लिखते हैं''

मुहम्मद कलम की कसम खाकर बताते हैं कि वह उन्मादी नहीं हैं जैसा कि उनके विरोधी उन्हें बताते हैं। वह कलम की कसम खाकर कहते हैं (जैसे कि यह बात लिख दी गई हो) कि उनके विरोधियों को बुरे दिन देखने पड़ेगे।

सूरा 'अल-हक्क' ६९:३६-४०

''......मैं कसम खाता हूँ उन चीजों की जो तुम्हें दिखाई देती हैं और उन चीजों की जो तुम्हें दिखाई नहीं देती।''

कसम यह बताने के लिए खाई गयी है कि कुरान एक प्रतिष्ठित संदेश वाहक (जिबरील फरिश्ता) की वाणी है परन्तु यह कसम विचित्र रूप में उन चीजों की खाई गई है, जो दिखाई भी देती है और दिखाई नहीं भी देती। शायद यह जिबरील फरिश्ते की कसम हो जो दिखाई नहीं देता।

सूरा 'अल-मअरिज' ७०:३८

''मैं कसम खाता हूँ उदय होने के स्थानों की और अस्त होने के स्थानों की।''

यह कसम अल्लाह ने खाई है मुहम्मद को यह यकीन दिलाने को कि काफिरों को जन्नत में दाखिल नहीं होने दिया जायेगा और यह अल्लाह के बस से बाहर नहीं।

सूरा 'अल-मुद्दस्सिर' ७४:३२

''.......कसम है चाँद की।''

यह कसम अल्लाह ने खाई है यह बताने को, कि जो भी कुरान को मानव निर्मित बताएगा, उसे वह जहन्नुम में डाल देगा। यानी धमकी भी कसम खाकर दी गई है, अल्लाह द्वारा। पद्–टीप में स्पष्ट किया गया है कि ये आयतें एक विद्वान वलीद–बिन –मुगीर के विषय में उतरी हैं, जो कुरान को मनुष्य (मुहम्मद) की रचना निर्धारित करता था। आश्चर्य है कि अल्लाह एक विद्वान मनुष्य की साहित्यिक टीका पर इस कदर नाराज हो गया कि उसने चाँद की कसम खाकर उसे जहन्नुम भेज देने की धमकी दी।

सूरा 'अल-कियामः' ७५:१-२

''कसम खाता हूँ कियामत के दिन की।

....कसम खाता हूँ मैं मलामत करने वाली आत्मा की।''

मुहम्मद द्वारा बार–बार कयामत का जिक्र आने पर लोग भी बार–बार पूछने लगे कि ''कयामत कब आयेगी?'' कोई सही उत्तर उनके पास न होने से मुहम्मद चिढ़ गये। उन्होंने एक जगह कुरान में कयामत के दिन को एक हजार वर्ष लम्बा बताया है और दूसरी जगह ५० हजार वर्ष लम्बा। पर यह कभी नहीं बताया कि आखिरकार कयामत आएगी कब? मुहम्मद की इस शर्मिन्दगी भरी स्थिति को संभालने के लिए टीकाकार मुहम्मद फारुख खां इस आयत पर पदटीप देते हैं–

''यहाँ कयामत को प्रमाणित करने के लिए कयामत ही की कसम खाई गई है; जिसका अर्थ यह हुआ कि कयामत अपनी दलील आप है।''

जिसे मुहम्मद और अल्लाह बताने में असमर्थ हैं उसका खुलासा ऐसी टिप्पणियों से कुरान के टीकाकार कर रहे हैं। कसम तो आत्मा की भी खाई गई है, पर यह कहीं नहीं बताया कि यह कसम किसलिए खाई है।

सूरा 'अल-मुरसलात' ७७:१

''कसम है उन (हवाओं) की जिनसे झौंके चलाये जाते हैं।''

यह हवाओं की कसम पुनः यह याद दिलाने हेतु अल्लाह ने खाई है कि कयामत आकर रहेगी। साथ ही जो इसे झुठलाते हैं, कुरान को बनावटी बताते हैं उन्हें धमकी दी गई है उनकी तबाही की। इस सूरा में हवाओं की कसम खाकर यह धमकी ५ बार दी गई है। टिप्पणीकार फारुख खां द्वारा अल्लाह व रसूल की बात संभालते हुए टिप्पणी की गई है– ''रसूल का यह काम नहीं है कि वह यह बताये कि कयामत किस सन् व संवत् में आ रही है? (पृ० ७८७ पाद टीप–१२)

सूरा 'अन-नाजिआत'-७९:१

''कसम है जो अन्तिम सीमा तक जा लेते है।''

यह कसम घोड़ों की खाई गई है। घोड़ों की कसमें अल्लाह और मुहम्मद द्वारा कुरान में अनेकों बार खाई गई है– ''कसम उनकी जो हिंकारते हुए दौड़ते हैं।'' (सूरअल–आदियात–१००:१) व्याख्याकार मुहम्मद फारुख खां लिखते हैं कि ''कसमों के रूप में कयामत का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।'' (पृ० ७८५) यानी कुरान की कयामत की सत्यता का एकमात्र प्रमाण यह है कि अल्लाह ने यह बात घोड़ों की कसम खाकर बताई है। **(शेष अगले अंक में)**

ओ३म्-ध्वज ही सबसे प्यारा

प्रियवीर हेमाइना

चक्रवर्ती था राज हमारा
ओ३म्–ध्वज था प्रमाण हमारा
विश्वविजय का गान हमारा
गूँजता था धरा पर न्यारा
ओ३म् –ध्वज यही सबसे प्यारा

आर्यों की पहचान कराता
उनके घर पर जब लहराता
उत्तम घर वह ही कहलाता
लहरे जिस पर यह ध्वज प्यारा
ओ३म्–ध्वज यही सबसे प्यारा

सात्विकता बरसाने वाला
प्रेम–सुधा बरसाने वाला
जन–जन को हर्षाने वाला
शुचिता का प्रतीक यह न्यारा
ओ३म्–ध्वज यही सबसे प्यारा

साम–दाम से ना यह झुकता
न दण्ड–भेद के समक्ष झुकता
सत्य–न्याय पर यह है ठुकता
विभु–विभा का यह है सितारा
ओ३म्–ध्वज यही सबसे प्यारा

राम ने ली प्रेरणा इससे
कृष्ण ने ली शरण इससे
पढ़ो इतिहास, में सब किस्से
किस–किस का यह रहा सहारा
ओ३म् ध्वज यही सबसे प्यारा

कष्ट–क्लेश के भीषण रन में
लड़कर जोश बढ़े छन–छन में
कांपें दुरित देखकर मन में
मिट जाये भय–संकट सारा
ओ३म् ध्वज यही सबसे प्यारा

इस ध्वज के नीचे हैं निर्भय
प्राणिमात्र सब जड़ वा जंगम
फहराओ इस ही ध्वज को सब
पावनता है ध्येय हमारा
ओ३म्–ध्वज यही सबसे प्यारा

आओ प्यारे जन–जन आओ
वैदिक शिक्षा सब अपनाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ
अजर अमर ध्वज यही हमारा
ओ३म्–ध्वज यही सबसे प्यारा

रविदास ठाकुर बणि आई गुरु अर्जुन देव

संत प्रेमदास जस्सल

मध्ययुग में देश की सत्ता में देश की सत्ता विदेशी शासकों के हाथों में थी इसलिए वे दोनों हाथों से यहां का धन लूट रहे थे। वे देश की अमीर विरासत को समाप्त कर अपनी तलवार की ताकत से समाप्त कर अपनी तलवार की ताकत से इस्लाम धर्म फैला रहे थे। तत्काल भारत के हिन्दू राज्य आपसी फूट के कारण विदेशी हुकूमत की सरदारी कबूल कर बदले में अय्याशी भरा जीवन जीने के लिए दलित वर्ग को हर प्रकार से तंग करते थे। दलित वर्ग चक्की के दो पाटों के बीच पिस रहा था। मुसलमान इनके धर्म परिवर्तन में लगे थे। तब एक ऐसे पथ प्रदर्शन की आवश्यकता थी जो इन दीन–हीन लोगों की रखा करे। उस समय पतितों के प्रतित पावन भगवान रविदास का आविर्भाव हुआ। सतगुरु रविदास ने सयि कहा है 'जब–जब फैले जगत में कूड़, पाप, अंधकार, तब तक राखै हत्थ देह रविदास एक प्रभु हमार।' जब भी सृष्टिकर्ता के जीवों पर अत्याचार होता है तो स्वयं प्रभु किसी न किसी रूप में इस धरती पर अनवरिज होने है। इतिहासकों का कनि हे कि

संवत् १४३७ की माघ सुदी पंदरासं दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास। लगभग ६३८ वर्ष पूर्व मूलनिवासियों की राजधानी काशी में एक निमनवर्ग में पिता रघु तथा मता क[illegible] के यहा गुरु रविदास का जन्म हुआ।

सतगुरू रविदास जी के अविर्भाव के अविर्भाव के समय जनसाधारण की हालत बहुत तरसयोग थी। अपने अपनी वाणी में भी कहा है दारिद देख सब को हसै ऐसी दशा हमारी। क्योंकि देश के धर्माचार्य ही मानव मूल्यों का हनन [illegible] रहे थे। मानव को जन्म से जाना जाता था। [illegible]तवाद चरम सीमा पर थी। तब मानवता एवं समता की विचारधारा का प्रचार करने हेतु आपने समय के संतों का एक संगठन बनाकर भक्ति आंदोलन का शंखनाद कियां संता ने देश भर में भ्रमण कर इस भक्ति लहर दारा इस भारतीय समाज में एक नई चेतना पेदा की। जानी सुखबीर सिंह के अनुसार गुरु नानक के प्रकाश से पहले जो भक्ति लहर चली थी उसमें कबीर, रविदास, फरीद, नामदेव, त्रिलोचन, सेन, रामानन्द, धन्ना, पीपा, सूरदारस, सधना आदि प्रसिद्ध अगुवा संतों ने अपनी भक्ति और शकित द्वारा विदेशी हुकूमत को खोखला कर दिया था। गुरू ग्रंथ साहिब की समपादना करते समय गुरू अर्जुन देव जी ने इन सभी संतों की बाणियों को शामिल कर इस पवित्र ग्रंथ को मानव एकता, विश्व भ्रातृभाव तथा समरसता का प्रतीक बना दिया है।

धार्मिक क्रान्ति के नायक सतगुरू रविदास ने एक ऐसे समाज की कल्पना की यहां पर कोई छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब न हो। आपने मार्क्स ओर लैनिन से कई सदियां पहले भारत में समाजवाद का संकल्प रखा, जीवन मुकत तथा परमानन्द की प्राप्ति पर जोर दिया। मानवता का विरोध करने वाले धार्मिक एवं सामाजिक अन्याय के प्रति अपने जोरदार आवाज उठाई। आपने बताया कि आत्मा और परमात्मा एक ही हैं क्योंकि एक दूसरे में कोई भेद नहीं है। यह पवित्र आत्मा (प्रभु का अंश) प्रत्येक मनुष्य में है। ब्राह्मण और ख्ण्डाल के नाम अलग होने से भी उनमें परमजोति का निवास हे। यह आपकी सरल वाणी से स्पष्ट हो जाता है: जल की भीत पवन का थंभा, रक्त बूंद का गारा। हाड़ मांस नाडी को पिंजर पंखी बसै विचारा। भाव इस मानव शरीर में पांच तत्वों से बनी आतम की तो है। आप एक ईश्वर के उपासक थे और आपकी विचार धारा के अनुसार प्रभु सर्वव्यापक है और आत्म परमात्मा में केवल इतना ही अंतर है जिस प्रकार सोने से बने आभूषण या जल से बनी तरंग जैसा है।

सतगुरु रविदास जी ने नारी को भी बराबर के अधिकार देकर और उसे अमर अखंड नाम प्रदान कर तत्काल प्रतिकूल स्थितियों का डटकर सामना कियां इससे उच्च जाति की महारानियों झाली रानी मीराबाई आदि ने आपके विचारों से प्रभावित होकर अपनी शिष्यता ग्रहण कीं यही नहीं मीराबाई को तो आपने कई बार जीवनदान दिया, सती होने से भी बचाया और भारत से सती प्रथा का ही अंत किया।

गुरु अर्जुन देव जी ने भी माता को सर्वोत्तम पदवी देते हुए कहा है 'गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेशरां यह सब सतगुरू रविदास जी के सम्पूर्ण जीवन की सक्रियता का फल था कि आपके प्रवरती संतों ने भी स्त्री जाति के कल्याण हित कार्य कियां इस प्रकार आपने एक आदर्श राज की कल्पणा की। बेगमपुर का **संकल्प : 'बेगमपुरा सहर को नाउ। दूखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउं।।** 'एक ऐसे लोकतंत्र का आगाज किया जिस राज्य में सीी का आगाज किया जिस राज्य में सभी नागरिक बराबर हैं। तथा दुख के स्थान पर सुख को प्रधानता दी गई है क्योंकि इस नगर के वासी सब सवतंत्र हैं, एक दूसरे से प्रेम करते हैं और आपसी भाईचारे पर शेष पृष्ठ 10 पर

होली (एक वैज्ञानिक विवेचन)

सुरेन्द्र सिंह 'सूर्या'

फाल्गुन पूर्णिमा को सम्पन्न होने वाला होली नामक त्योहार भारतवर्ष के जन सामान्य का सबसे बड़ा त्योहार है। इस अवसर पर बच्चे, बूढ़े, नर–नारी सभी का उल्लास और उत्साह देखने लायक होता है। हमारे अन्य पर्वों की भाँति होली भी विज्ञान आधारित पर्व है। देश भर में एक साथ एक रात में सम्पन्न होने वाला होलिका दहन इस जाड़े और गर्मी की ऋतु–सन्धि में फूट पड़ने वाली चेचक, मलेरिया, खसरा तथा अन्य संक्रमण रोग–कीटाणुओं के विरुद्ध सामूहिक अभियान है। १४० डिग्री फारनहाट ताप से अपने शरीर को तपाते हुए परिक्रमा कर हम लोग शरीर के समस्त रोगों के जीवाणुओं को भी समाप्त करने में समर्थ होते हैं। प्राचीन काल से इस अवसर पर वेद मंत्रों के साथ यज्ञ किया जाता था जिसमें नई फसल के अन्न, जौ, गेहूँ आदि की आहूति दी जाती थी। संस्कृत ग्रंथों में भुने हुए अन्न को **होलका** भी कहा जाता है। उसी परम्परा के अनुसार आज भी लोग होली की अग्नि में गेहूँ व जौ की बाल को भूनते हैं।

नारद पुराण के अनुसार इस दिन अधर्मी, अन्यायी हिरण्यकशिपु की बहन होलिका उसके भगवान भक्त पुत्र प्रहलाद को मारने के लिए गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई। होलिका को वरदान मिला था कि उसे अग्नि जला नहीं पायेगी। किन्तु भगवान ने होलिका को भस्म कर प्रहलाद को बचा लिया। इसी स्मृति में होली कर्म एवं न्याय की जीत के रूप में मनाया जाता है।

जैमिनी मीमांसा ग्रंथ में होलिकाधिकरण नामक एक स्वतंत्र प्रकरण में होली की प्राचीनता का पता चलता है। विन्ध्यप्रदेश के रामगढ़ नामक स्थान से ३०० ईसा पूर्व का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें पूर्णिमा को मनाये जाने वाले इस उत्सव का उल्लेख है। **वात्सायन महर्षि** ने अपने कामसूत्र में 'होलाक' नाम से इस उत्सव का उल्लेख किया है। सातवीं शताब्दी में लिखी **रत्नावली नाटिका** में महाराजा हर्ष ने होली का बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन किया है। २१वीं शताब्दी में मुस्लिम पर्यटक **अल्बरूनी** ने भी भारत में होली के उत्सव का उल्लेख किया है। होली को वसन्तसखा **'कामदेव' की पूजा** के दिन के रूप में भी शास्त्रों में वर्णित है। आज के दिन कामदेव की पूजा की परिपाटी किसी समय समस्त भारत में थी। दक्षिण में आज भी होली का उत्सव **'मदन-महोत्सव'** के नाम से ही विख्यात है। होली रंग का त्योहार है। इन रंगों का हमारे शरीर और स्वास्थ्य पर अद्भुत

प्रभाव पड़ता है। वास्तविक दृष्टि से देखा जाए तो इस अवसर पर जिस रंग के प्रयोग का विधान शास्त्रकारों ने किया है वह है पलाश अर्थात् ढाक के फूलों (टेसुओं) का रंग। ढाक अपने विशिष्ट गुणों के कारण हमारे यहाँ सदा से पवित्र वृक्षों में गिना जाता रहा है। ढाक के फूलों से तैयार किया हुआ रंग एक प्रकार से उसके फूलों का अर्क होता है। यदि उस रंग में रंगा हुआ कपड़ा भिगोकर शरीर पर डाल दिया जाये तो रंग शरीर के अन्दरूनी स्नायु–मंडल पर अपना प्रभाव डालता है और संक्रामक बीमारियों को शरीर के पास फटकने नहीं देता है। यथा–

एतत्पुष्पं कफं पित्तं कुष्ठं दाहं तृमामपि।
वातं स्वेदं रक्तदोषं मूत्रकृच्छं च नाशयेत।।

(यज्ञ मधुसूदन)

यह पुष्प कफ, कुष्ठ, दाह, वायु रोग तथा मूत्र सम्बन्धी रोगों का नाश करता है। होली का त्योहार हिन्दू समाज का समरसता पर्व है। इस दिन सभी लोग छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब, जाति एवं वैरभाव भूलकर एक–दूसरे को रंग लगाकर गले मिलते हैं। इसलिए वैदिक काल से आज तक यह पर्व भाईचारे एवं संगठन सूत्र का संदेश देता चला आ रहा है।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री जगत प्रकाश नड्डा जी,
माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री,
भारत सरकार
निर्माण भवन, नई दिल्ली-११००११

विषय :- चिकित्सा एवं परा-चिकित्सा शिक्षा में हिंदी माध्यम से पढ़ाई एवं परीक्षा की व्यवस्था किए जाने।

महोदय,

चिकित्सा और परा–चिकित्सा में हिंदी माध्यम से पढ़ाई और परीक्षा के संबंध में राष्ट्रपति जी के आदेश भी देखने की कृपा करें, जिनके अनुसार चिकित्सा संबंधी विषयों की पढ़ाई में हिंदी माध्यम के प्रयोग का लगभग २५ वर्ष पहले प्रावधान किया गया । यह आवश्यक है कि राष्ट्रपति जी के आदेशों का पालन हो । साथ–साथ राष्ट्रपति जी के २७ अप्रैल, १९६० के आदेश भी देखने आवश्यक हैं । इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें ।

सादर,
भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक	मुन्ना कुमार शर्मा	वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

सांप्रदायिक बसपा को समर्थन नहीं दिया जा सकता, जम्मू-कश्मीर को सेना के सपुर्द किया जाये-हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा है कि बसपा जैसी सांप्रदायिक व जातिवादी पार्टी को हिन्दू महासभा का समर्थन नहीं दिया जा सकता है। जहाँ एक ओर हिन्दू महासभा अखंड हिन्दू राष्ट्र की स्थापना, हिन्दू, हिंदी व हिंदुस्तान का विकास एवं हिन्दू एकता के लिए कार्य करती है। वहीं दूसरी ओर बहुजन समाज पार्टी उत्तर प्रदेश सहित पूरे हिंदुस्तान को सांप्रदायिक व जाति के आधार पर बांटने में लगी है। बसपा हिन्दू एकता की बहुत बड़ी दुश्मन है कुमारी मायावती को हिंदुओं के कल्याण से कोई लेना देना नहीं है। वह तो मुस्लिम तुष्टिकरण में लगी हैं। ऐसे में हिन्दू महासभा कभी भी बसपा का समर्थन नहीं कर सकती है। वहीं अखिल भारत हिन्दू महासभा ने उत्तर प्रदेश विधान सभा में स्वयं अपनी पार्टी का प्रत्याशी लड़ाया है। ऐसे में वह किसी पार्टी को समर्थन कैसे दे सकती है। श्री शर्मा ने कहा है की स्वामी चक्रपाणि स्वयंभू, ढोंगी व हिन्दू विरोधी हैं। वे तो दारुल उलूम देवबंद के एजेंट होकर हिन्दू विरोधी कार्यों में लगे हैं। वो हिन्दू महासभा के अधिकृत पदाधिकारी नहीं हैं, इसलिए उनके द्वारा हिन्दू महासभा के बसपा को समर्थन की घोषणा आमजनों को दिग्भ्रमित करने व ठगने के आलावा कुछ नहीं हैं। वहीं अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूरे जम्मू–कश्मीर को भारतीय सेना के सपुर्द करने व सेना को पूर्ण अधिकार देने की मांग की हैं। हिन्दू महासभा के नेताओं ने कहा हैं कि प्रदेश की पीडीपी–भाजपा सरकार जम्मू–कश्मीर से आतंकवाद, देशद्रोह व पत्थर बाजी को रोकने में पूर्णतः विफल रही हैं। इसलिए प्रदेश में राष्टपति शासन लागू कर सेना को पूर्ण अधिकार देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

रविदास ठाकुर बणि आई...

पर बल देते हैं। वाणि विमल रविदास की। इनकी वाणी मधुर है। आपने संगीतमय वाणी द्वारा दबे कुचले लोगों में समता का भाव जागृत कर सबको निर्भय बनाया और गरीबों का दोहन करने वालों को ही अपना शिष्य बना डाला अब तो विप्र प्रधान तिहि कराह डंडउति तेरे नाम सरणाई रविदासु दासा। भाव प्रधान ब्राह्मण भी आपको डंडवत करने लगे। आपने सामाजिक क्रान्ति लाने में अपनी आध्यात्मिक प्रसिद्धि का सदोपयोग करके भारतीय समाज को एक नयी दिशा दी। यहां गुरू रामदास जी कहते हैं कि सतगुरू रविदास जी की रूहानी शक्ति देखकर तत्काल चारों वर्ण अपकी शरण में आ गए रविदास चमारू उस्तुति करे, हरि कीरति निमरव इक गाइ। पतित जाति उत्तमु भइया, चारि बरन पए पगि आई।। आपकी प्रेम भक्ति की विचारधारा से प्रभावित होकर गुरू अर्जुन देव जी ने भी कहा हैः भलो कबीर दासु दासन को उत्तम सैनु जन नाई।

डचते उच नामदेव समदरसी, रविदास ठाकुर बणि आई।।

इस उक्ति के समर्थन में संत नाभादास ने आपको परमहंस (परमेश्वर) कहा। संत कबीर ने संतों में शिरोमणी, संत रज्जव ने परम पारस कहकर आपकी महिमा की, तथा मीराबाई ने आपको स्मरण करते हुए कहा है मीरा सतगुरू देव की करे वंदना आसं जन चेतन आत्म कहा धन भगवान रविदास। गुरू रविदास जी की भक्ति और शक्ति के आधार पर इनकी वाणियों को प्रचार कर हम भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता कायम कर सकते हैं।

शेष पृष्ठ 12 का

कला और अभिव्यक्ति की.....

अल्लाउद्दीन की सेना हक्की बक्की रह गयी और गोरा, बादल ने तत्परता से अपने राजा को अल्लाउद्दीन की कैद से मुक्त कर सकुशल चितौड़ के दुर्ग में पहुंचा दिया। इस हार से अल्लाउद्दीन बहुत लज्जित हुआ और उसने अब चितौड़ विजय करने की ठान ली। आखिर उसके छः माह से ज्यादा चले घेरे व युद्ध के कारण किले में खाद्य सामग्री का अभाव हो गया। तब राजपूत सैनिकों ने केसरिया बाना पहन कर जौहर और शाका करने का निश्चय किया। जौहर के लिए गोमुख के उत्तर वाले मैदान में एक विशाल चिता का निर्माण किया गया। रानी पदिमनी के नेतृत्व में १६००० राजपूत रमणियों ने गोमुख में स्नान कर अपने सम्बन्धियों को अन्तिम प्रणाम कर जौहर चिता में प्रवेश किया। थोडी ही देर में देवदुर्लभ सौंदर्य अग्नि की लपटों में स्वाहा हो कर कीर्ति कुंदन बन गया। जिसकी कीर्ति गाथा आज भी अमर है और सदियों तक आने वाली पीढ़ी को गौरवपूर्ण आत्म बलिदान की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। फ्रांस के एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने अपनी भारत यात्रा के दौरान राजस्थान भ्रमण के बाद लिखा था "राजस्थान की धरती पर पाँव रखने का साहस नहीं होता...पता नहीं पाँव के नीचे किस वीर/वीरांगना का थान (समाधि) हो"। वास्तव में राजस्थान के सोने सी चमकती बालू रेत के हर एक कण कण में एक वीरगाथा लिखी है। चित्तौड़ की ऐसी महान विभूतियों के अपमान पर भी यदि कोई कहे कि राजपूतों को अपना खून काबू में रखना चाहिए तो यही कहा जाएगा कि वह बुद्धू या तो राजस्थान की धरती से परिचित नहीं है या फिर जानबूझ कर कोई षडयंत्र कर रहा है। हालांकि हिन्दू समाज कभी भी किसी प्रकार की हिंसा या कानून के उल्लंघन में कभी विश्वास नहीं रखता किन्तु आखिर कब तक वह सहन करेगा? जब कोई माँ दुर्गा, सरस्वती या भारत माता के नग्न चित्र बनाए या फिर भगवान शंकर को अभद्रता से दौडाए, को हमारे आस्था स्थल, मंदिरों, संतों, सांस्कृतिक मान्यताओं, वीर–वीरांगनाओं, परम्पराओं व धर्म गुरुओं का अपमान करे या सरे आम गौ मांस खाने का दम्भ भरे तो भी? क्या सभी संवैधानिक मर्यादाओं के पालन की जिम्मेदारी सिर्फ शांति प्रिय हिन्दू समाज की ही है? इतना समझ लेना चाहिए कि अब भारत जाग रहा है और अपने स्वाभिमान की रक्षार्थ संवैधानिक रूप से कदम बढाने में सक्षम है। अतः जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है वहीं सभी को अपनी धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक धरोहरों तथा पुरातन वीर गाथाओं को संजोकर रखने का भी अधिकार है। आवश्यकता इस बात की है कि कोई किसी के अधिकारों में अतिक्रमण न करे और एक दूसरे का सम्मान कर अपने अधिकारों से अधिक कर्तव्यों का पालन करे।

शेष पृष्ठ 5 का

लला फिर आइयो खेलन.....

भला कुँवर कान्ह अपना परिचय देने में क्यों संकोच करें मुस्कराते हुए कन्हैया ने कहा–

नन्दग्राम की हौं मैं छोरी, जसुदा मेरो माई, नाम है मेरा कन्हाई।। ब्रज...

बरसाने में आयो प्यारी, राधा जू से अब है जाय सगाई।। ब्रज में,

रसिक कन्हैया की मधुर वाणी सुन सखियाँ उमंग के घुंघल पाँवों में बांधे नृत्योन्मत अबीर, गुलाल के उड़ते बादलों के बीच पिचकारियों की सतरंगी फुहारो के बनते इन्द्रधनुष तथा ढोल,डफ, मंजीरे एवं मृदंग के तालो नाचते गाते रसिक शिरोमणि अपने कुँवर कन्हैया नन्दलाल को होली खेने बरसाने आने का प्रेमभरा निमंत्रण देते हुए गाने लगीं–

लला फिर अइयो खेलन होली।। जै जै श्री राधे।।

शेष पृष्ठ 1 का

चीन और भारत ने आपसी रिश्तों......

किया गया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने चीन की सरकार से मांग की है कि भारत की एनएसजी सदस्यता का समर्थन करें।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

एलओसी पर एक आतंकी मारा....

एके ४७ रायफल, छह मैगजीन और रात के दौरान देखने में मदद करने वाला एक मोनोक्युलर नाइट विजन उपकरण मिला। अधिकारियों ने बताया कि इनके अलावा एक काले बैग में एक अन्य एके मैगजीन, सूखे मेवे और फलों का रस मिला। अधिकारियों ने कहा, ऐसा समझा जाता है कि शेष आतंकवादी पर्वतीय इलाके और जंगल का फायदा उठाकर सीमा के दूसरी ओर भाग गए। सतर्क बलों ने घुसपैठ की एक कोशिश नाकाम कर दी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की नरेन्द्र मोदी की सरकार से पूछा है कि आखिर भारत में घुसपैठ कब बन्द होगा। सरकार भारतीय सीमा में घुसपैठ रोकने का पूर्ण प्रयास करें।

शेष पृष्ठ 2 का

यमराज की चिंता....

शराब के नशे में चूर होकर अपनी महंगी गाड़ियों को तेज रफ्तार से मनमाना चलाकर फुटपाथ पर सो रहे गरीब मजदूरों को मौत की नींद सुलाकर अकाल मृत्यु का कोटा पूरा कर रहे हैं। इसके लिए आप निराश नहीं हों और पृथ्वीलोक वापस लौट जाएँ।''

यमराज ने विष्णुजी को सादर प्रणाम किया और वापिस चल दिये। थोड़ा ही आगे पहुँचने पर नारदजी मिल गये। उन्होंने कहा, ''नारायण–नारायण! हे मृत्यु के देवता! यहाँ कैसे आना हुआ?'' यमराज ने प्रणाम किया, ''हे देवर्षि! आप ही मार्ग बतायें कि जो मनुष्य योनि में पृथ्वीलोक पर जन्म ले पाते हैं लौटकर वापिस लाने का कार्य दुर्लभ हो रहा है। जिनकी आयु पूर्ण हो चुकी है। वापिस आने में हीला बहाना कर रहे हैं। और अकाल मृत्यु की दर भी घट रही है। अब कुछ मार्ग बताएँ।'' नारदजी ने कहा, ''नगर गाँव के अन्दर जो झोलाछाप अज्ञानी लोग अस्पताल चला रहे हैं, लोगों का इलाज कर रहे हैं वह बीमारी खत्म करने की बात कहते हैं जबकि वह बीमारी नहीं बीमार को ही खत्म कर रहे हैं।'' ''न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।'' अभी व्यापम में घोटाला करके अपने माता–पिता की काली कमाई का सदुपयोग कर लाखों रुपया रिश्वत में देकर डॉक्टर बन रहे हैं अथवा बन गये हैं, स्वर्णपदक विजेता बने हैं, बड़ी–बड़ी डिग्रियाँ हासिल कर चुके हैं। उनके द्वारा चिकित्सा विभाग से आपके कार्य की अच्छी प्रगति हो रही है। चिकित्सा विभाग भी आपका खूब सहयोग कर रहा है। इसलिये आप निश्चित होकर पृथ्वीलोक लौट जाएँ।'' यमराज वापिस पृथ्वीलोक आकर अपने कार्य करने में नई ऊर्जा के साथ लग गये।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 4 का

अनुपम जड़ी-बूटी......

जल सदृश्य स्राव होता हो, तो वह बंद हो जाता है। यदि जल गाढ़ा और दुर्गन्ध युक्त बन गया हो, तो इसके क्वाथ से योनि को धोते रहना चाहिए। गर्भाशय की शिथिलता की वजह से मासिक धर्म में अवरोध होता हो, या साफ न आता हो, तो इसके क्वाथ का सेवन करने से लाभ होता है। फूटे हुए व्रणों की, इसके क्वाथ से धोने से और फोहा रखने से पूय और रसोत्पत्ति कम होती है एवं दुर्गन्ध दूर होती है। इसके क्वाथ के सेवन फुफ्फस यंत्र व आंत्र रोग, गर्भाशय रक्तस्राव, उदर पीड़ा, जलन, चर्म रोग, कुष्ठ रोग, अपस्मार–मृगी का रोग, ऐंठन, मधुमेह, रक्तचाप, ह्रदय रोग, कोलेस्ट्रोल कंट्रोल, लीवर रोग, वृक्क रोग व शरीर के मोटेपन को घटाने में लाभप्रद है। भारतवर्ष में केरल राज्य में प्राचीन वर्षों से इसकी लकड़ी मिले पानी को उबालकर, ठंडा करके औषध जल के रूप में दाहशमन, पाचन, तृषाहर, ह्रदय रोग, उच्च रक्तचाप, रक्त सुधारक, मूत्रल, स्त्री रोग, मधुमेह रोग, रूप–रंग–कांतिवर्द्धक तथा अन्य अनेक प्रकार की व्याधियों के शमन हेतु प्रयोग में लेते आ रहे हैं। यह स्वदेशी आयुर्वेदिक दवाइयाँ जैसे 'ल्यूकोल' तथा 'विको वज्रदन्ति' को बनाने में काम आने वाली जड़ी–बूटियों में से एक है। 'ल्यूकोल' प्रदर तथा योनि के रक्तस्राव को रोकने तथा 'वजदंति' मसूड़ों के रक्तस्राव को रोकने व इन्हें शक्ति प्रदान करने में सहायक हैं। आधुनिक अन्वेषणों व अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि इसमें साइटोटोक्सिक, एन्टिट्यूमर, एन्टिमाइक्रोबियल, एन्टिवायरल, इम्यूनोस्टिमुलेट तथा कई अन्य गुण हैं। औषध विज्ञानानुसार 'पतंग' में एन्टि एलेर्जिक, एन्टी सेनेफाइलेक्टिक, एन्टिबायोटिक, एन्टिबेक्टेरियल, एन्टिसेप्टिक, एन्टिकाग्युलेट, एन्टिकाम्प्लीमेन्टरी, एन्टिफंगल, एन्टिइंफलम्मेटरी, एन्टिओक्सिडेंट, एन्टिप्रोलिफेरेटिव, एन्टिपायरोटिक, एन्टिकेंसर, एन्टिडायबेटिक, बारबिट्यूरेट, सायटोटोक्सिक, पोटेन्शिसशन, एचआईवी–प्रथम, प्रोटिसज, इनहिबिटर, इम्यून स्टिमुलेंट, नफ्रोप्रोटेक्टिव, सिमन कोग्यूलेशन, बायोरिलेक्सेशन, एंजाइम स्टिम्पूलेशन इत्यादि कई गुण पाए जाते हैं।

विशिष्ट आयुर्वेदिक योग निम्न प्रकार से उपलब्ध हैं :

आसवम् एवं अरिष्टम् : उसीरासवम्, चन्दनासवम्, दशमूलारिष्टम्, मृत्संजीवनीसुरा, सरीबादियासवम्,

घृतम् : कल्याणका घृतम्, महाकल्याणका घृतम्, दसस्वरसा घृतम्, सर्वमयन्तका घृतम्।

कसायम् : द्राक्षादि कसायम्, महातिक्तम् कसायम्।

तैलम् : त्रिफलादि तैलम्, इरिमेदादि तैलम्, बला तैलम् इत्यादि।

हर्बल जल बनाने की विधि : उबलते एक लीटर शुद्ध पीने योग्य जल में १० ग्राम पतंग वृक्ष की हार्टवुड की बारीक कतरन डालकर पात्र को ढककर चूल्हे से नीचे उतार लें। ५–१० मिनट बाद ढक्कन हटाकर देखने पर गुलाबी से लाल रंग का जल दिखाई देगा। इसे छानकर ठंडा कर अन्य साफ बोतल या पात्र में ले लेवें। स्वयं भी पीएँ व परिवार के अन्य सदस्यों को भी पिलावें। स्वाद व सुगंध बढ़ाने हेतु उबलते पानी में इलायची कूटकर, जीरा व सौंठ का चूर्ण भी डाल सकते हैं। यह जल हानिरहित व स्वास्थ्यवर्द्धक है।

कृषि व आय : इसकी खेती करीब–करीब हर प्रकार की भूमि तथा १८–४० डिग्री सेल्सियस तापमान तक में की जा सकती है। वृक्ष की दूरी छः फीट। एक एकड़ भूमि में लगभग १५०० पेड़ लगाये जा सकते हैं। पौधों की सिंचाई बूँद–बूँद पद्धति से करना लाभदायक रहती है।

शेष पृष्ठ 6 का

शिक्षा के क्षेत्र में दो सदी......

इलाहाबाद। शायद प्राचीनकाल से उनके अन्तर्मन में रची–बसी पवित्र गंगा उनको एक सनातन–धर्मावलम्बी श्रद्धालु की तरह प्रयाग की ओर खींचती रही है जो आज भी हमें साफ दीखता है। पुनःश्च : उपर्युक्त आलेख श्री जनार्दन झा 'जनजीवन', वाजिबपुर, मुजफ्फरपुर के 'मिथिला के अनूठे पंडित' शीर्षक ४२ पृष्ठों के लेख जो १६४२ में १००० पृष्ठों के जयंती स्मारक सजिल्द व सचित्र ग्रंथ के आधार पर है, दिए गए तथ्यों को सत्यापित करता है।

दिनांक 15 मार्च से 21 मार्च 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
चतुर्थी	16 मार्च	वीरवार
प० गुरुदत्त विद्यार्थी पुण्य तिथि	19 मार्च	रविवार
अष्टमी	20 मार्च	सोमवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

कला और अभिव्यक्ति की आड़ में भारतीयवीर वीरांगनाओं का अपमान

✍ विनोद बंसल

कहा जाता है कि किसी देश को भीतर से खोखला करना होतो उसके इतिहास के गौरव शाली पलों को मिटा कर जनता में अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान समाप्त करदो व्यक्ति का स्वाभिमान अपने आप दम तोड़ देगा और फिर उस के ऊपर ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करो कि वह सदा आपका ही गुणगान करे। लार्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था का मूल मंत्र यही तो था जिस कारण पूर्ण स्वावलंबी सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाने वाला भारत अंग्रेजों के जाते जाते टीचर प्रोफ़ेसर लेक्चरर प्रिंसीपल उस्ताद मौलवी इत्यादि तो बहुत सारे दे गए किन्तु आचार्य यानि आचारवान व्यक्तियों का अभाव हो गया। अंग्रेजों के जाने के बाद भी हमारी शिक्षा, संस्कार, स्वाभिमान, इतिहास तथा महापुरुषों की गौरवशाली परम्पराओं को नष्ट करने के कुचक्र आजकल नित नए तरीकों से चलाए जा रहे हैं। कभी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, कभी कला की आजादी, तो कभी खाने की आजादी की आड़ में आजकल नए–नए षडयंत्र हमारे धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक मान बिन्दुओं पर छद्म हमले कर अपनों को अपनों से ही दूर ले जा रहे हैं। अभी ताजा–ताजा उदाहरण प्रसिद्ध फिल्मकार संजय लीला भंसाली द्वारा निर्माणाधीन फिल्म 'पद्मावती' का है जिसमें राजस्थान के चित्तौड़ गढ़ की आन बान और शान की प्रतीक रानी पद्मावती के चरित्र पर उंगली उठाने की कोशिश की गई है। आओ जानें रानी पद्मावती को संक्षेप में।

रावल समरसिंह के बाद उनका पुत्र रतनसिंह चितौड़ की राजगद्दी पर बैठा रतनसिंह की रानी पदिमनी/पद्मावती की सुन्दरता की ख्याती दूर–दूर तक थी। उसकी इसी सुन्दरता के बारे में सुनकर दिल्ली के तत्कालीन बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने पदिमनी को पाने के लिए चितौड़ दुर्ग पर एक विशाल सेना के साथ चढ़ाई कर दी। चितौड की रक्षार्थ तैनात राजपूत सैनिकों के अदम्य साहस वीरता के चलते कई महीनों की घेरा बंदी व युद्ध के बावजूद जब वह चितौड़ के किले में घुस तक नहीं पाया तो उसने एक कुटिल योजना बनाते हुए अपने दूत को राजा रतनसिंह के पास भेजा। सन्देश भेजा कि "हम तो आपसे मित्रता करना चाहते है। रानी की सुन्दरता के बारे में बहुत सुना है सो हमें सिर्फ एक बार रानी का मुंह दिखा दीजिये हम घेरा उठाकर दिल्ली लौट जायेंगे"। सन्देश सुनकर रतनसिंह आग–बबूला हो उठे पर रानी पदिमनी ने इस अवसर परदूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपने पति रत्नसिंह को समझाया कि मेरे कारण व्यर्थ ही चितौड़ के सैनिकों का रक्त बहाना बुद्धिमानी नहीं है"। मेवाड़ की सेना अल्लाउद्दीन की विशाल सेना के आगे बहुत छोटी थी, इसी कारण रानी ने बीच का रास्ता निकालते हुए कहा कि अल्लाउद्दीन चाहे तो मेरा मुख आईने में देख सकता है। अल्लाउद्दीन भी समझ रहा था कि राजपूत वीरों को हराना बहुत कठिन काम है और बिना जीत के घेरा उठाने से उसके सैनिको का मनोबल टूटेगा तथा बदनामी भी होगी अतः उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। चितौड़ के किले में अल्लाउद्दीन का स्वागत रतनसिंह ने अतिथि की तरह किया। रानी पदिमनी का महल सरोवर के बीचों–बीच था सो दीवार पर एक बड़ा आईना लगाया गया रानी को आईने के सामने बिठाया गया। आईने से खिड़की के जरिये रानी के मुख की परछाई सरोवर के पानी में साफ दिखाई पड़ती थी वहीं से अल्लाउद्दीन को रानी का मुखारविंद दिखाया गया। सरोवर के पानी में रानी के मुख की परछाई में उसका सौन्दर्य देखकर अल्लाउद्दीन चकित रह गया और उसने मन ही मन रानी को पाने के लिए कुटिल चाल चलने की सोच ली। राजपूताना अतिथि परम्परा के तहत जब रतनसिंह अल्लाउद्दीन को वापस जाने के लिए किले के द्वार तक छोड़ने आये तो अल्लाउद्दीन ने अपने सैनिको को संकेत कर रतनसिंह को धोखे से गिरफ्तार कर लिया और बाद में रतनसिंह कि मुक्ति के बदले रानी पद्मावती को सौंपने का प्रस्ताव भेजा। रानी ने भी उसकी कुटिलता का जबाव कूटनीति से देकर सन्देश भेजा कि –"मैं मेवाड़ की महारानी अपनी सात सौ दासियों के साथ आपके सम्मुख उपस्थित होने से पूर्व अपने पति के दर्शन करना चाहूंगी यदि आपको मेरी यह शर्त स्वीकार है तो मुझे सूचित करे। रानी का ऐसा सन्देश पाकर कामुक अल्लाउद्दीन की खुशी का ठिकाना न रहा और प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

उधर रानी ने अपने काका गोरा व भाई बादल के साथ रणनीति तैयार कर सात सौ डोलियाँ तैयार करवाई। इन डोलियों में हथियार बंद राजपूत वीर सैनिकों को बिठाकर छंटे हुए योद्धाओं को कहारों के वेश में भेज दिया। इस तरह पूरी तैयारी कर वह वीर रानी अल्लाउद्दीन के शिविर में अपने पति को छुड़ाने हेतु चली। उसकी डोली के साथ गोरा व बादल जैसे युद्ध कला में निपुण वीर भी थे। अल्लाउद्दीन व उसके सैनिक रानी के काफिले को दूर से देख रहे थे। पालकियां अल्लाउदीन के शिविर के पास आकर जैसे ही रुकी, उनमें से राजपूत वीर अपनी तलवारें लहराते हुए बाहर निकले और यवन सेना पर अचानक टूट पड़े। परिणामतः शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

जनता पूछे, कहां हैं नोटबंदी के चमत्कार

नोटबंदी के बाद दो हजार के नोट जारी किये जाने के कुछ ही सप्ताह के बाद से इसके नकली नोट भी बरामद होने शुरू हो गये हैं। इस तरह के जाली नोट सबसे पहले नवंबर महीने में गुजरात में पकड़े गये थे और अब देशभर से इस तरह के नकली नोट मिलने की खबरें आ रही हैं। कहा तो यह गया था कि नोटबंदी की एक वजह जाली नोटों पर रोक लगाना भी है, लेकिन यह बात गलत साबित हुई है। नकली नोट के मामले को प्रधानमंत्री मोदी ने हिंसा से जोड़ा था। उन्होंने कहा था कि आतंकवादियों और आतंकवाद से निपटने के लिए नोटबंदी की गयी थी। नोटबंदी सर्दी के महीने में हुई थी और उन दिनों कश्मीर में सेना के खिलाफ हिंसा की वारदात कम होती है, लेकिन कश्मीर में जैसे ही बर्फ पिघलने लगी, हर वर्ष की तरह ही इस बार भी वहां हिंसा की घटनाओं में वृद्धि होने लगी है। हाल के दिनों में कश्मीर में एक मेजर समेत चार जवान मारे गये हैं, नोटबंदी के कारण यहां आतंकवाद में किसी प्रकार की कमी नहीं आयी है। सेना के लिए ऐसी घटना आश्चर्य चकित कर देने वाली है, क्योंकि उनसे कहा गया था कि नोटबंदी से कश्मीर में उनके खिलाफ होने वाली हिंसा पर रोक लग जायेगी। स्थानीय नागरिकों पर आरोप लगाते हुए सेना प्रमुख ने गुस्से में बयान दिया है कि स्थानीय नागरिक सेना के काम में रुकावट डालने के साथ ही आतंकवादियों को भगाने में सहयोग भी कर रहे हैं। इससे भी ज्यादा चिंताजनक सेना प्रमुख का वह वादा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जो भारतीय पाकिस्तान और इसलामिक स्टेट के झंडे को लहरायेगा, उसे देशद्रोही माना जायेगा। अगर सेना प्रमुख और उनके सैनिक इस तरह के अपराध में किसी को भी लिप्त पाते हैं, तो उन्हें इसके बारे में उन्हें जम्मू–कश्मीर पुलिस को खबर करनी चाहिए। क्योंकि सेना के पास कार्रवाई करने का कोई संवैधानिक अधिकार नहीं है। सेना प्रमुख जनरल रावत ने अपने इस बयान के दौरान कश्मीर की जनता द्वारा सेना के साथ किये गये व्यवहार के बारे में भी कुछ ऐसी बातें कहीं, जिसे बहुत से भारतीय नहीं जानते होंगे। उन्होंने कहा कि जब सेना आतंकवादियों के खिलाफ कोई कार्रवाई कर रही होती है, तो स्थानीय लोग सुरक्षा बलों की इस कार्रवाई में उनका साथ नहीं देते हैं। यह बात केंद्र सरकार, जिसकी राज्य सरकार में भागीदारी भी है, को एक चेतावनी की तरह लेनी चाहिए। यह बात और है कि कश्मीर में सीमा पार से भेजे जानेवाले आतंकवादी आतंक मचा रहे हैं और यही बात विश्वास करने योग्य भी है। जबकि यह स्वीकारोक्ति की कश्मीर की पूरी जनता ही सेना के विरुद्ध है। यह बात सही है या गलत, लेकिन इस बात को जनरल रावत ने स्वीकार किया है कि हमारा उद्देश्य ऐसी कार्रवाई करना होता है, जिससे लोगों को नुकसान न पहुंचे, लेकिन स्थानीय लोग न सिर्फ हमारी कार्रवाई में बाधा पहुंचाते हैं, बल्कि आतंकवादियों को भगाने में भी मदद करते हैं। यही वह कारण है, जिससे बड़ी संख्या में हमारे सैनिक हताहत होते हैं। नोटबंदी के बाद जिस अन्य कामयाबी का दावा किया गया वह कहां है, क्योंकि आतंक को रोकने में तो यह विफल रहा है। हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि हिंसा मुद्रा की समस्या नहीं है और इस मामले के जितने अंदरूनी पहलू हैं, उतने ही बाहरी भी हैं। इन्हीं कारणों के आधार पर इस समस्या के नये समाधान तलाशने चाहिए।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 08 मार्च से 14 मार्च 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।